वर्ष: 16 | अंक : 2 | फरवरी 2025 | मूल्य: ₹ 10 /=

हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका

हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-2
फरवरी, 2025
माघ-फाल्गुन, 2081 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-।, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह
मूल्य-एक प्रति-रु.10/-
पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:
कार्यालय: हंसलोक संदेश
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074
संपर्क सूत्र-011-26652101/102
मो. नं. : 8800291788, 8800291288
Email: hansloksandesh@gmail.com
Website: www.hanslok.org
Subject to Delhi Jurisdiction
RNI No. DEL.HIN/2010/32010

संपादकीय

समय का सदुपयोग कर आगे बढ़ें

खोई हुई संपत्ति श्रम करने से दोबारा मिल सकती है। ज्ञान अध्ययन से और बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य उपचार से फिर मिल जाएगा, लेकिन बीता हुआ समय फिर लौटकर नहीं आता। समय का अर्थ ही है बदलना। अगर परिवर्तन न हो तो समय का बोध नहीं हो पाएगा। सूरज सुबह निकलता है, दोपहर को चरम पर होता है और शाम को ढल जाता है। समय न रुकता है और न लौट कर वापस आता है। समय वह है जो हम सबसे ज्यादा चाहते हैं, लेकिन इसी को सबसे ज्यादा खराब भी करते हैं। समय को नियंत्रित नहीं करेंगे तो समय हमें नियंत्रित करेगा। सही समय पर लिया गया एक ही फैसला, भविष्य में होने वाली बड़ी परेशानियों से बचाता है। हर काम अपने सही समय पर ही होता है, जैसे पेड़ों में फल और पौधों में फूल अपने सही समय पर ही आते हैं। इनका खिलना इनके लिए सफलता है, जिसका समय तय है। ऐसे ही हमें भी सफझना होगा कि हम सारे इंसान भी अलग होते हैं, सबका अपना-अपना समय आता है। किसी की सफलता पर ईर्ष्या क्यों? सबका अपना समय होता है, सब समय के हिसाब से बड़े होते हैं।

जो समय के साथ चलता है, वह अक्सर समय से आगे दिखता है। समय की भले ही आंखें नहीं होतीं, पर समय सब कुछ देख रहा होता है। समय दिखाई नहीं देता, लेकिन बहुत कुछ दिखा जाता है। वृद्ध अतीत में जीता है; इसलिए निराश रहता है। युवा भविष्य में जीता है; इसलिए हताश दिखाई देता है। मगर बच्चा वर्तमान में जीता है; इसलिए सदैव प्रसन्न रहता है। वर्तमान में जिएं और सदैव प्रसन्न रहें। जो अक्सर यह कहते हैं कि मेरे पास समय नहीं है, असल में वह 'व्यस्त' नहीं बल्कि 'अस्त-व्यस्त' हैं। हम जितना समय दूसरों को समझाने में लगाते हैं, अगर उसका आधा समय भी खुद पर लगाएं तो जीवन में कहीं आगे निकल सकते हैं। समय हमारे जीवन का एक अनमोल सिक्का है और केवल हमें ही तय करना है कि इसे कैसे खर्च किया जाना चाहिए। जो समय बीत गया, उसकी चिंता कदापि भी नहीं करनी। तैराक जब तैरता है तो सामने हाथ फैला कर आने वाली लहरों को पकड़ता है, उन उछलती चंचल तरंगों पर हाथ रखकर वह आगे बढ़ता है। अगर वह तैराक विपरीत दिशा में लौटने वाली लहरों को पकड़ने की चेष्टा करे, तो वह डूब जाएगा। बीती हुई लहर को नहीं देखना है। सामने वाली लहर को पकड़ कर उसके सहारे आगे बढ़ना है। दीपक बुझने के बाद उसमें तेल डालने से प्रकाश वापस नहीं लौटेगा। इसलिए समय का सदुपयोग करें। समय की बर्बादी वर्तमान और भविष्य दोनों को बर्बाद करती है। ■

महाशिवरात्रि का महान व्रत है भोलेनाथ की अनुकंपा को अपनी झोली में समेटने का महोत्सव

सनातन संस्कृति में महाशिवरात्रि का वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत महत्व है। माना जाता है कि इस रात्रि ग्रह का उत्तरी गोलार्द्ध इस प्रकार अवस्थित होता है कि मानव की आंतरिक ऊर्जा प्राकृतिक रूप से ऊपर की ओर जाती है। मान्यता है कि यह ऊर्जा मनुष्य को आध्यात्मिक शिखर तक ले जाने में सहायक सिद्ध होती है। यह तथ्य है कि हमारे देश में पर्व एवं त्योहार भारतीय संस्कृति की पहचान होते हैं। ये केवल हर्ष एवं उल्लास का माध्यम नहीं हैं, अपितु यह भारतीय संस्कृति के संवाहक भी हैं। इनके माध्यम से ही हमें अपनी गौरवशाली प्राचीन संस्कृति के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है। महाशिवरात्रि भी संस्कृति के संवाहक का ऐसा ही एक बड़ा त्योहार है।

महाशिवरात्रि सनातन संस्कृति का महोत्सव होने के साथ एक महान व्रत भी है जो भगवान शिव की अनुकंपा पाने के लिए रखा जाता है। यह पर्व हर साल फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को आता है। महाशिवरात्रि को शिव की विशेष कृपा प्राप्त करने और उनकी अनुकंपा को अपने जीवन में समेटने का महोत्सव माना जाता है, जिसे भक्तजन अपने जीवन में सुख, शांति, और समृद्धि लाने के लिए करते हैं। महाशिवरात्रि का पर्व सनातन संस्कृति में बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। इस दिन भगवान शिव का ध्यान करना, व्रत करना और उनकी विशेष पूजा करना शुभ माना गया है। भक्तजन इस दिन रात्रि जागरण करते हैं और भक्ति, भजन और कीर्तन के माध्यम से शिव को प्रसन्न करने का प्रयास

करते हैं।

इस दिन का एक विशेष महत्व यह है कि इसे शिव और शक्ति के मिलन के उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार महाशिवरात्रि वह रात है, जब भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इस दिन अंधकार से प्रकाश की ओर जाने का भी प्रतीकात्मक महत्व है। यह भगवान शिव द्वारा संसार को राह दिखाने का भी प्रयास माना जाता है। महाशिवरात्रि का व्रत रखने की विधि सरल होती है।

भक्तजन इस दिन उपवास करते हैं। विशेष पूजा में दिनभर शिवलिंग का जल, दूध, शहद, दही, घी, शर्करा से अभिषेक कर बेल पत्र चढ़ाये जाते हैं। भक्तजन पूरी रात जागकर भगवान शिव का संकीर्तन करते हैं और उनकी महिमा का गान करते हैं ताकि भगवान शिव उन्हें अपनी भक्ति का वरदान प्रदान कर दें। यह पर्व न केवल आध्यात्मिक उन्नति के लिए, बल्कि सामाजिक एकता और भाईचारे के लिए भी महत्वपूर्ण है।

इस विशेष पर्व के दौरान, भक्तजन यह महसूस करते हैं कि जब वे सच्चे मन से भगवान शिव की आराधना करते हैं, तो शिव स्वयं उनके जीवन में खुद को प्रकट करते हैं। यह मन में सकारात्मकता लाने और समस्याओं को दूर करने का एक साधन होता है।

इस वर्ष महाशिवरात्रि 26 फ़रवरी को है यह पर्व समाज में एकता और भाईचारे

का संदेश भी फैलाता है, जिससे सभी एक साथ भगवान शिव की आराधना कर सकें। महाशिवरात्रि का पर्व भगवान शिव की कृपा को अपने जीवन में समेटने का एक अद्वितीय अवसर है। यह हमें सीख देता है कि सच्ची भक्ति, समर्पण, और तपस्या से हम अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। महाशिवरात्रि का आयोजन न केवल व्यक्तिगत जीवन में सुख और शांति लाने की क्षमता रखता है, बल्कि यह हमें एकता और सामंजस्य के रास्ते पर भी ले जाता है। इस दिन भोलेनाथ की आराधना करके, हम केवल भगवान शिव की अनुकंपा ही नहीं पाते बल्कि अपनी आत्मा की शुद्धि भी करते हैं, जो कि मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है। वैसे तो शिवरात्रि प्रत्येक मास की अमावस्या से एक दिन पूर्व अर्थात कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाई जाती है, जबकि महाशिवरात्रि वर्ष में एक बार आती है। यह फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाई जाती है। शिव पुराण की ईशान संहिता में कहा गया है कि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में भगवान शिव करोड़ों सूर्यों के समान प्रभाव वाले लिंग रूप में प्रकट हुए थे।

फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि।
शिवलिंगतयोद्भूत: कोटिसूर्यसमप्रभ:॥

माना जाता है कि इसी दिन प्रलय आएगा, जब प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुए ब्रह्मांड को तृतीय नेत्र की ज्वाला से नष्ट कर देंगे। इसीलिए शिवरात्रि को कालरात्रि भी कहा जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी पर भगवान शिव सर्वप्रथम शिवलिंग के स्वरूप में प्रकट हुए थे। इसीलिए इस दिवस को भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग के प्राकट्य पर्व को प्रत्येक वर्ष महाशिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। एक अन्य कथा के अनुसार इस दिन भगवान शिव का देवी पार्वती के साथ विवाह सम्पन्न हुआ था। यानी यह भोलेनाथ के विवाह की रात्रि है। उन्होंने वैराग्य त्याग कर गृहस्थ जीवन अपना लिया था। एक पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन भगवान शिव ने समुद्र मंथन के समय निकले कालकूट नामक विष को अपने कंठ में रख लिया था। इससे उनका कंठ नीला हो गया था। इसीलिए उन्हें नीलकंठ नाम से भी जाना जाता है। कहा जाता है कि इस घातक विष के कारण भगवान शिव को ताप चढ़ गया था। इसे उतारने के लिए उनके मस्तक पर बेल पत्र रखा गया, क्योंकि बेल पत्र शीतल गुण वाला होता है। इससे उन्हें संतुष्टि प्राप्त हुई। तभी से शिवलिंग पर बेल पत्र चढ़ाने की परंपरा आरंभ हुई।

महाशिवरात्रि का वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्व है। माना जाता है कि इस रात्रि ग्रह का उत्तरी गोलार्द्ध इस प्रकार अवस्थित होता है कि मानव की आंतरिक ऊर्जा प्राकृतिक रूप से ऊपर की ओर जाती है। मान्यता है कि यह ऊर्जा मनुष्य को आध्यात्मिक शिखर तक ले जाने में सहायक सिद्ध होती है। आराधना के समय भक्त सीधा बैठता है तथा उसकी रीढ़ की हड्डी सीधी होती है। इसके कारण उसकी ऊर्जा उसके मस्तिष्क की ओर जाती है। इससे उसे शारीरिक ही नहीं, अपितु मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति भी प्राप्त होती है।

महाशिवरात्रि मनाने का एकमात्र यही उद्देश्य है कि मनुष्य अपनी सुषुप्त चेतना को जागृत कर उसमें अवस्थित हो और यह तभी संभव है जब हम सद्गुरु प्रदत्त ध्यान-साधना को निरन्तर करते रहें। इसके लिए हमें भगवान शिव की शिक्षाओं को अपने जीवन में आत्मसात करना होगा। हम शिव को चित्रों में तथा मंदिरों में देखते हैं कि वे पद्मासन लगाये नेत्र बंद कर ध्यानावस्था में बैठे हुए हैं। वे निरन्तर आत्मस्थ होकर ध्यान कर रहे हैं। ध्यान की शक्ति से शिव हलाहल विष को पान कर अमर हो गये। हमें भी उनसे सीख मिलती है कि हम अपने सांसारिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए मन को सदैव परमेश्वर के ध्यान-सुमिरण में लगाये रखें। हमें सांसारिक विषय-वासनाओं से बचना है तो निरन्तर ध्यान सुमिरण करते रहें, यही भगवान शिव की हम सभी मनुष्यों के लिए शिक्षा है। और यही महाशिवरात्रि मनाने का उद्देश्य है कि हम मायारूपी रात्रि में शिवरूपी आत्मा में जागरण करें। ■

यह संसार स्वप्नवत है, केवल भगवान का भजन ही सत्य है

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! हमको जगह-जगह पर सत्संग करने की जरूरत इसलिए पड़ती है ताकि लोग अध्यात्म ज्ञान को जानकर अपने इस मानव जन्म को सफल कर सकें। एक बार मैं रूस के लोगों से मिलने गया। उन्होंने कहा कि हम किसी भी धर्म को नहीं मानते। मैंने कहा, फिर क्या मानते हो? वे कहने लगे हम शान्ति चाहते हैं। हमने कहा कि इस पर भी तो विचार करना चाहिये कि शान्ति कैसे मिलती है। प्यास लगने पर यदि एक गिलास पानी मिल जाये, तो मनुष्य को कुछ समय के लिए शान्ति मिल जाती है। यदि मनुष्य को भूख लगी हो, तो रोटी खिला दो और नौकरी के लिए तड़फते हुए मनुष्य को यदि नौकरी दिला दो, तो उसको शान्ति प्राप्त हो जाती है। शान्ति सबको प्रिय और सुख देने वाली है। शान्ति दो प्रकार की होती है- एक बाहरी और दूसरी आन्तरिक, या यों कहिये, एक कुछ समय के लिए होती है और दूसरी हमेशा के लिए। शान्ति को प्राप्त करने के लिए कर्म किया जाता है, उसको ही धर्म कहते हैं। रोटी, कपड़ा और मकान से कुछ काल के लिये तो शान्ति मिल जाती है, पर आन्तरिक दुःख दूर नहीं होते। पिता की आज्ञा मानना पुत्र का धर्म, पुत्र गलत मार्ग पर न चले उसका ध्यान रखना पिता का कर्त्तव्य, स्त्री की हर प्रकार से रक्षा करना पति का धर्म तथा मन-वचन-कर्म से पति की सेवा करना स्त्री का धर्म है। हमारे अन्दर

ऐसे संस्कार हैं कि स्त्री पति को साक्षात् परमात्मा जाने और पति का धर्म स्त्री को प्रसन्न रखना है।

आज संसार में बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ कहते हैं कि राजनीति में धर्म को नहीं लाना चाहिये, तब तो भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध भूमि में धर्म का उपदेश देकर बड़ी गलती की। आज यदि दुर्भाग्यवश ठीक युद्ध भूमि में हमारी फौज लड़ने से इन्कार कर दे, तब आज के बड़े-बड़े लोगों के पास क्या साधन है, जो फौजों को लड़ने के लिये तैयार करें। आज लोगों को धर्म का ज्ञान ही नहीं है। लाहौर वाला अपना धर्म अलग और बम्बई वाला अपना धर्म अलग समझ बैठा है, इसलिए ईसाई ईसा मसीह को, इस्लाम धर्म वाले हजरत मोहम्मद साहब को, सनातन धर्म वाले मूर्तियों को पूजना, कुछ वेदों को पढ़ना और हवन करने को धर्म मानते हैं; परन्तु इतना भी नहीं सोचते कि इतने भिन्न-भिन्न धर्म क्यों और कैसे हो गये हैं। आखिर इन सब धर्मों का बीज क्या है? मैं जो कुछ कह रहा हूँ, मनुष्य धर्म के लिए कह रह हूँ। मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ योनि है, क्योंकि इसमें वह हलुवा-पूरी बना भी सकते हैं और खा भी सकते हैं। मनुष्य तन की प्राप्ति देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। रामचरित मानस में संत तुलसीदास जी कहते हैं-

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन्हि गावा।

आज लोग आँखें बन्द करके जिन देवी-देवताओं की पूजा में लगे हुए हैं, उनके लिए यह मनुष्य तन दुर्लभ बताया है। यदि वे ऐसा जानते कि मनुष्य तन देवताओं को दुर्लभ है, तो वे देवताओं की सेवा में मनुष्य शरीर को कभी न गँवाते। कोई देवी-देवता, पशु-पक्षी या जलचर जीव हलुवा-पूरी नहीं बना सकते; हाँ खा

सब ही सकते हैं। खाना नाम भोग का और बनाना नाम कर्म का है। जिससे शान्ति प्राप्त हो, उस धर्म का ज्ञान मनुष्य तन में ही हो सकता है। संसार में दो सिद्धान्त के लोग हैं–एक ईसाई और मुसलमान, जो पुनर्जन्म को नहीं मानते, रूह को कब्र में बन्द होना मानते हैं और दूसरे वे जो आवागमन अर्थात् लख चौरासी को मानते हैं। क्या जब हम लख चौरासी में चले जायेंगे या जब कब्र में बन्द हो जायेंगे, तब शांति प्राप्त करने वाले धर्म को जानेंगे? इस तन को पाकर आगे के लिए क्या किया, चार दिन अपना राग अलापा, वाह-वाह हुई और संसार से चले गये। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

अरब खरब लौं सम्पदा,
उदय अस्त लौं राज।
तुलसी जो निज मरण है,
आवे कौन काज।।

चाहे मनुष्य एक लाख वर्ष तक भी चक्रवर्ती राजा हो गया, लेकिन वह भोजन खाकर मैला ही तो बनाता रहा, इसके अतिरिक्त उसने क्या किया। धर्म तो वह वस्तु है, जिसके लिए भगवान श्रीराम कहते हैं-

साधन धाम मोक्ष कर द्वारा।
पाय न जेहि परलोक सँवारा।।

मनुष्य का धर्म अपने मालिक (ईश्वर) को जानना है। जो मनुष्य तन को पाकर भगवान को याद नहीं करता, उसको नमकहरामी बताया गया है। कहा है-

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
जिन सुन्दर तन दियो,
ताहि बिसरायो, ऐसो नमक हरामी।

भगवान ने हमें कैसा सुन्दर शरीर दिया। हमें सुनने, देखने तथा सूंघने के लिए कान, आँख और नाक दिए। हमारे खाने के लिए कितने अच्छे-अच्छे पदार्थ बनाये, परन्तु हम मालिक के उपकारों को भूलकर दिन-रात भोगों को पाने के लिए लालायित रहते हैं। हमारी गति ऐसी हो गई है, जिस प्रकार प्रातःकाल में सूअर गाँव के चारों ओर घूमता है मैला भक्षण करने के लिए। मनुष्य भी इधर-उधर विषय रूपी मैला भोगने के लिए ही चक्कर लगाता रहता है।

जीव पर चार कृपाएँ होती हैं। पहली कृपा भगवान की है, मनुष्य शरीर का मिलना। यदि परमात्मा सृष्टि बनाते समय मनुष्य का ढाँचा ही न बनाता, तब जीव को मनुष्य तन कैसे प्राप्त होता। ऐसा सुन्दर देव-दुर्लभ मनुष्य शरीर पाकर भी जो भगवान का भजन नहीं करता, उसको पक्का नमकहरामी कहते हैं।

मनुष्य का धर्म अपने मालिक (ईश्वर) को जानना है। जो मनुष्य तन को पाकर भगवान को याद नहीं करता, उसको नमकहरामी बताया गया है।

दूसरी कृपा जीव पर वेद-शास्त्रों की है। वेद-शास्त्रों में चार वाणी बताई हैं– परा, पश्यन्ति, मध्यमा और बैखरी। हम जो बोलते हैं, यह सब बैखरी वाणी है। कण्ठ से मध्यमा तथा हृदय से पश्यन्ति वाणी का स्फुरण या उच्चारण होता है। इससे आगे चौथी वाणी परा है। परा वाणी को बिना सद्गुरु के नहीं जान सकते।

तीसरी कृपा जीव पर सद्गुरु की होती है कि वे भगवान के प्रकाश और नाम को बताते हैं। गुरु का अर्थ है 'गु' नाम अंधकार 'रु' नाम प्रकाश। जो अन्धेरे को मिटाकर प्रकाश दिखाये, उसको गुरु कहते हैं। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

बन्दउँ गुरु पद कंज,
कृपा सिन्धु नर रूप हरि।
महा मोह तम पुँज,
जासु बचन रवि करनिकर।।

सद्गुरु मनुष्य को आत्मा का ज्ञान देकर मायारूपी भवसागर से पार उतरने का साधन बता देते हैं। चौथी कृपा जीव पर स्वयं की होती है कि वह आत्मज्ञान को जानने के बाद सद्गुरु महाराज की सेवा करते हुए भगवान के सच्चे नाम का सुमिरण करे। केवल भगवान का नाम ही सत्य है, बाकी सब मिथ्या।

कहा जाता है कि सत्य के प्रभाव से राजा हरिश्चन्द्र को लेने के लिए स्वर्ग से विमान आया। राजा हरिश्चन्द्र ने कहा, मुझे सफाईकर्मी का ऋण देना है, अगर वह भी हमारे साथ चले, तो मैं चल सकता हूँ। विष्णु के दूतों ने सफाईकर्मी से कहा तुम्हारे तो ऐसे कर्म नहीं हैं, परन्तु हरिश्चन्द्र के पुण्य के प्रभाव से तुम भी स्वर्ग चलो। सफाईकर्मी कहने लगा कि मैंने घर में सूअर पाल रखे हैं, अगर ये भी स्वर्ग चलें, तो मैं भी चल सकता हूँ। देवदूतों ने सूअरों से कहा कि तुम्हारे भाग्य कहाँ थे, परन्तु हरिश्चन्द्र के पुण्य प्रभाव से तुम भी स्वर्ग चलो। सूअरों ने कहा, क्या स्वर्ग में मैला खाने को मिलेगा? देवदूत कहने लगे स्वर्ग में तो अमृत चखा जाता है, मैला नहीं। सूअरों ने कहा, तब हमें ऐसे स्वर्ग से कोई मतलब नहीं। कहने का भाव यह है कि जिनका जीवन सूअरों की तरह विषय-रूपी मैला ही भक्षण करने का है, वे मोक्ष को तुच्छ समझते हैं और संसार के विषयों को प्राप्त करने के लिए प्राणों की बाजी लगा देते हैं।

जिस तरह भौतिक जगत में किसी

भी काम को सीखने के लिए, किताबी ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें अध्यापक की आवश्यकता होती है, उसी तरह आध्यात्मिक विद्या को जानने के लिए हमें सच्चे सद्गुरु की जरूरत होती है।

गीता के पन्द्रहवें अध्याय के छठे श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जहाँ सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि की रोशनी नहीं, वहां स्वयं प्रकाश है। जहाँ जाकर जीव वापस नहीं लौटता, वह मेरा परम धाम है। जब तक मानव उस रोशनी को नहीं देखता, जब तक वह आत्मज्ञान को नहीं जानता, तब तक वह निगुरा है, क्योंकि कबीर साहब कहते हैं–

गगन मण्डल के बीच में,
तहाँ झलके नूर।
निगुरा महल न पाइयाँ,
पहुंचेगा गुरु पूर।

दुनिया में तन्त्र-मन्त्रों के बताने वाले गुरु बहुत हैं, परन्तु इन मंत्रों से मन एकाग्र नहीं होता और चंचल मन को शान्ति भी नहीं मिलती।

माला तो कर में फिरे,
जीभ फिरे मुख माहिं।
मनुवां तो दसों दिश फिरे,
यह तो सुमिरण नाहिं।

हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई और जैनी, तुम चाहे जिस धर्म को मानो, परन्तु मन को एकाग्र करने के लिए भगवान के सच्चे नाम को जानकर हर समय सुमिरण करो। गुरु नानकदेव जी कहते हैं-

ऊठत बैठत सोवत जागत नाम।
कहे नानक सद् भये तिनके काम।।

भगवान के जिस नाम का नींद और स्वप्न में भी सुमिरण हो सके, उस नाम को जानना चाहिए। जीव माता के गर्भ में जिस नाम को जपता है और बाहर आकर भूल जाता है, उस नाम को जानकर सुमिरण करो। गीता के अध्याय आठ, श्लोक सात में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से उस नाम का सर्वकाल में सुमिरण करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि अर्जुन तू लड़ाई भी कर और सुमिरण भी कर। अब यह तो कोई कह ही नहीं सकता कि हम सुमिरण नहीं कर सकते। वह नाम सबके हृदय में है, जिसे हनुमान जी ने हृदय फाड़कर रोम-रोम में व्यापक बताया था। जब तक उस नाम को बताने वाला सद्गुरु नहीं मिलता,

जिस तरह भौतिक जगत में किसी भी काम को सीखने के लिए, किताबी ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें अध्यापक की आवश्यकता होती है, उसी तरह आध्यात्मिक विद्या को जानने के लिए हमें सच्चे सद्गुरु की जरूरत होती है।

तब तक हृदय स्थित नाम को नहीं जान सकते। वह नाम सोलह स्वर छत्तीस व्यंजन से बाहर है, वह रचना में नहीं आता। भागवत में बताया है कि चार युगों की एक चौकड़ी होती है- सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। ये चारों युग 43,20,000 वर्ष के होते हैं। ऐसी एक हजार चौकड़ी बीत जाने पर एक दिन और एक हजार चौकड़ी बीतने पर ब्रह्मा की एक रात होती है। ऐसे दिन-रात के हिसाब से ब्रह्मा की सौ साल की आयु होती है। उसके बाद ब्रह्मा भी लीन हो जाते हैं। ब्रह्मा के शान्त होने पर जो बचता है, उसी को बीज कहते हैं और मैं उसी बीज को जानने के लिए कहता हूँ। भगवान शिव माता पार्वती को समझाते हुए कहते हैं-

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना।
सत् हरि भजन जगत् सब सपना।।

यह सारा जगत स्वप्न है, इसमें किया हुआ पूजा, पाठ, यज्ञ, हवन, दौड़-भाग सब स्वप्न में ही है। सच्चा तो एक परमात्मा के नाम का सुमिरण है, जो इस स्वप्न से बाहर है।

देखो, रावण के दस सिर और बीस हाथ थे। जब वह मरने लगा, तब भगवान श्री राम ने लक्ष्मण जी को नीति सीखने के लिए रावण के पास भेजा। रावण ने लक्ष्मण को बताया कि अच्छा कार्य तुरन्त करना चाहिए, उसे कल पर नहीं नहीं छोड़ना चाहिए और बुरा कार्य आगे के लिए छोड़ देना चाहिए। मेरी इच्छा थी कि स्वर्ग तक जाने के लिए सीढ़ी लगाऊँ और समुद्र का जो खारा जल है, उसे मीठा करूँ। केवल देवताओं को आज्ञा देने की देर थी, परन्तु मैं उस अच्छे कार्य को कल पर टालता रहा और जो बुरा काम था सीता माता को चुराना, वह कार्य तुरन्त कर डाला। उसका परिणाम निकला कि सोने की लंका जलकर खाक हो गई, सारा परिवार नष्ट हो गया और मैं मृत्यु शैया पर पड़ा हूं।

अगर भगवान के सच्चे नाम को जानना उचित समझते हो तो आज ही जानने का निश्चय करो, उसे कल पर मत छोड़ो और अगर बुरा समझते हो, तो कल पर अवश्य छोड़ देना। भगवान का सच्चा नाम ही मन को रोकने की सही युक्ति है और उसी का नाम योग है। उसी योग से परमात्मा के निकट पहुंच सकते हैं। जब तक इस योग को नहीं जानेंगे, तब तक दुःखों से छुटकारा नहीं मिलेगा। एक ओर अंधेरा तो दूसरी ओर उजाला। अन्धेरे में रहोगे तो नाना प्रकार के दुःख भोगोगे और उजाले में रहोगे, तब सुख और आनंद की प्राप्ति होगी।

हरि के भजन बिना संसार से खाली हाथ ही जाएगा

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! जब हमारे शरीर से प्राण निकल रहे होंगे, तब हमको याद आयेगा कि हमारे शहर में सन्त-महात्मा आये थे। उनका हमने ध्यान से सत्संग नहीं सुना और हमने यह अनमोल शरीर भोग-पदार्थों को प्राप्त करने में ही गंवा दिया। बचपन के बाद जवानी और बाद में बुढ़ापा भी आ गया, लेकिन भगवान का भजन नहीं किया। जब काल आयेगा, तो वह कब किसको कहां से ले जाये, कोई नहीं जानता। भजन में कहा है-

रे मन ये दो दिन का मेला रहेगा।
कायम न जग का झमेला रहेगा।।
इससे तो आगे भजन ही है साथी।
हरि के भजन बिन अकेला रहेगा।।

मनुष्य जब संसार को छोड़कर जायेगा, तो केवल भगवान के भजन की कमाई ही साथ में जायेगी, बाकी संसार का सब कुछ यहीं पर छूट जायेगा। एक सेठ जी थे। उनके पास बहुत धन था। एक साधु महाराज उनके पास आये। वे कहने लगे- महाराज! आपका यह मकान एक सराय है। सेठ जी ने कहा- महाराज! यह तो मेरा घर है। आपने कैसे कह दिया कि यह सराय है। साधु महाराज ने कहा कि इस मकान में आपसे पहले कौन रहते थे? सेठ जी ने जवाब दिया- मेरे दादा-पड़दादा रहते थे। साधु महाराज ने पूछा कि आज वे सब कहां हैं? सेठ जी ने कहा-महाराज! वे सब चले गये। साधु महाराज ने कहा- आप भी एक दिन चले जाओगे। आपके बच्चे भी यहां से चले जायेंगे, तो यह मकान एक सराय ही तो हुआ। सेठ जी ने सोचा कि साधु महाराज की यह बात तो बहुत सही है। यहां तो हमेशा कोई नहीं रह पाया। यह संसार तो चंद दिनों का मेला है। सेठ जी ने साधु महाराज से पूछा कि यह संसार जब दो दिन का ही मेला है, तो फिर सत्य क्या है। जब सेठ जी ने सत्य को जानने की इच्छा प्रकट की, तो साधु महाराज ने उन्हें उस सत्य का, आत्मा का बोध कराया। आत्मज्ञान को जानने के बाद सेठ जी की समझ में आया कि वाकई में यह बात बिलकुल सच है। संसार का सब कुछ यहीं पर छूट जायेगा, केवल प्रभु के सच्चे नाम की कमाई ही साथ जायेगी। सद्गुरु महाराज से भगवान के सच्चे नाम को जानकर हमें खूब भजन-सुमिरण करना चाहिए।

हमने जो यह मनुष्य शरीर धारण किया हुआ है, वह किसलिये धारण किया है? पशु, पक्षी और अन्य योनियों के जीव केवल भोगों को भोग सकते हैं, वे आत्मा का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। मनुष्य शरीर में ही आत्मा के ज्ञान को जान सकते हैं। भगवान बुद्ध थे, जिनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। बचपन में ज्योतिषियों ने उनके पिता शुद्धोधन से कहा कि इनको साधु-सन्तों से दूर रखना, इनको साधु-संतों के पास मत जाने देना। यदि इनको वैराग्य हुआ तो एक दिन ये घर परिवार छोड़ देंगे। जब वे बड़े हुए, तो रास्ते में उन्होंने एक मुर्दा देखा, फिर एक रोगी देखा और एक बूढ़ा व्यक्ति देखा। उनके पूछने पर साथी ने बताया कि एक दिन आपकी भी यह दशा होगी। मेरी भी एक दिन ऐसी ही हालत होगी। ऐसा सोचकर सिद्धार्थ के मन पर बहुत प्रभाव पड़ा और उनको वैराग्य हो गया। सिद्धार्थ अपने बेटे और पत्नी को छोड़कर सत्य की खोज में घर से बाहर निकल पड़े। जाकर एक वट वृक्ष के नीचे आंखें बन्द कर बैठ गये। एक दिन वहां सुजाता नाम की आत्मज्ञानी नारी अपनी सखियों के साथ भजन गाती हुई आ गई। उसके भजन के भाव थे कि सितार के तार को तुम इतना भी मत खींचो कि वीणा के तार ही टूट जायें और तार को इतना ढीला भी मत छोड़ो कि उसमें से स्वर ही न निकले। जब सुजाता ने सिद्धार्थ को आत्मज्ञान कराया, तब वे ध्यान में बैठ गये और उन्हें बोधत्व की प्राप्ति हुई।

नाम जपत कुष्ठी भला, चुइ-चुइ पड़े जो चाम

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों। मनुष्य शरीर में भगवान के सच्चे नाम को जानकर भजन करना चाहिए। भजन के बिना यह शरीर किसी काम का नहीं है। जब मनुष्य मर जाता है, तो कहते हैं कि इसे जल्दी ले जाओ, कहीं भूत बनकर ना आ जाये। उसे कब्र में नीचे गाढ़ देते हैं या फिर जला देंगे।

देखो, महापुरुष उसको कहते हैं, जो वास्तव में अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। लक्ष्य प्राप्ति का साधन समय के तत्वदर्शी महापुरुष बताते हैं। इसलिए तत्वदर्शी के पास जाओ और उनसे विनम्र-भाव से आत्मज्ञान के बारे में पूछो। जब तुम्हारी कीमती चीज गिर जाती है, तो झुककर उस चीज को उठाते हो। कहते हैं-

झुकते वही हैं,
जिनमें जान होती है।
अकड़े रहना तो,
मुरदे की पहचान होती है।

जो महापुरुषों के सामने झुकते नहीं हैं और उनसे माँगते नहीं हैं, वे इस संसार से भी खाली हाथ चले जाते हैं। संतों ने कहा है-

नैनों की कर कोठरी,
पुतली पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डारि के,
पिया को ले रिझाय।।

तेरे हृदय के अन्दर ही वह चैतन्य देव विराजमान हैं। कहा है-

तेरे अन्दर चेतन देव,
अन्दर जोत प्यारे दी।

वह ज्योति तुम्हारे अन्दर ही है और उसका ज्ञान तत्वदर्शी महापुरुष अर्थात् सद्गुरु महाराज कराते हैं। कहा है-

ज्यों तिल माहीं तेल है,
ज्यों चकमक में आग।
तेरा साईं तुझ में,
जाग सके तो जाग।।

जब तुम घी बिलोते हो, तो पहले दूध को जमाकर दही बनाते हो, फिर उसको मथकर यत्न से मक्खन निकालते हो। आज एक माता ने मक्खन के समोसे बना रखे थे। मक्खन के समोसे मैंने जिन्दगी में पहली बार देखे। मतलब मनुष्य खाने के लिए क्या-क्या चीज बना लेता है। उस मक्खन के अन्दर मेवा डाला हुआ था। मैंने कहा- मैं तो मक्खन खाती नहीं हूँ। डाक्टर कहते हैं कि माता जी, हमें संसार में आपकी जरूरत है, हमें आप चाहिये, इसलिए आप उबला हुआ खाना खाओ। घी-मक्खन आदि से बनी चीजों में ऐसे-ऐसे विकार पैदा हो जाते हैं, जो बाद में जहर बन जाते हैं। इसलिए अगर इस शरीर को स्वस्थ रखना चाहती हैं, तो उबला हुआ खाना खाइये। बड़ी लम्बी-चौड़ी किताबें उन्होंने हमें दे रखी हैं और कह रखा है कि आप उबला हुआ खायें। घी कभी न खायें। मैंने कहा कमजोरी आ जायेगी, तो कहा कि कमजोरी कभी नहीं आ सकती है। अगर कोई लाला मोटा हो, तो उसे उबली हुई चीजें खानी चाहिए। उबली हुई चीज से कमजोरी नहीं आती है। पालक, गोभी, मूली के पत्तों, मूली जो भी खाओ, सब चीजों को मिलाकर पका दो। पकाकर अदरक आदि डालकर मूंगफली के तेल में छौंक दो। देखो, सबसे ज्यादा विटामिन मूँगफली में होती है, घी में नहीं। विदेशों में घी सस्ता है, मूँगफली का तेल महँगा है। इस तरह से पकाकर उसको आप पी लीजिये। स्वस्थ जीवन और लम्बी आयु के लिए उसे बहुत अच्छा बताया है। इस जीवन को स्वस्थ रखना चाहिये। अगर यह जीवन स्वस्थ नहीं रहेगा, तो संसार की सुन्दरता को कैसे देखोगे और फिर आगे के लिये भी इसमें कुछ कमाई करके जाओ।

देखो, जब प्रधानमंत्री दिल्ली से कहीं दूसरी जगह के लिए जाते हैं, तो उनके लिए सारे मार्ग खुले मिलते हैं। ऐसे ही आत्मज्ञानी के लिये भी बताया कि उसके लिए भगवान के सारे मार्ग खुले रहते हैं। आपने सुना होगा कि राजा हरिश्चन्द्र जब संसार से विदा हो रहे थे, तो उनके लिए स्वर्ग से विमान आया। सारे प्रतिबन्ध हटा करके उनके लिये विमान आया।

धर्मशास्त्र कहते हैं कि जब–जब भक्तों ने अपने प्रभु को, भगवान को दिल से याद किया, तो भक्तों को दर्शन देने के लिये स्वयं भगवान को आना पड़ा। संत कबीरदास जी कहते हैं-

राम बुलावा भेजिया,
दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधु संग में,
सो बैकुण्ठ न होय।

राम कहते हैं कि कबीर, तुम आ जाओ। तुम्हारा टाइम हो गया है और वह कहते हैं कि मुझे तो जो आनन्द इस साधु-संग में आता है, वह किसी भी चीज में नहीं आता। एक दूसरी संस्था का आदमी हमारे यहाँ आया। पन्द्रह-बीस दिन हमारे साथ रहने के बाद उसने ज्ञान को जानने की इच्छा प्रकट की। हमारे महात्मा जी ने उसको ज्ञान दिया। उसके बाद वह फिर पन्द्रह-बीस दिन हमारे साथ रहा। मैंने कहा- बताओ सच कहना कि यह ज्ञान धर्म के अनुकूल है या नहीं, अविनाशी है या नहीं, यह ज्ञान सनातन है या नहीं, यह सबके लिए एक जैसा है या नहीं? उसने कहा- यह सबके लिये एक जैसा है, सनातन है और अविनाशी है, लेकिन इस मर्म को कोई नहीं समझता है। मैंने कहा- अब तो समझ गया, अब तू जा। तब देख लीजिये वह गया और हंस जयंती में फिर दिल्ली आया। इस बीच अपने परिवार के दस व्यक्तियों को, पिता, बहन, भाई, बहनोई सबको उसने उपदेश दिला दिया। हैदराबाद में हमारे महात्मा जी थे, उन्हें वहाँ से ले जाकर उसने सबको उपदेश दिलाया। अब वह यहाँ आया, तो मेरे लिए बढ़िया साड़ी ले आया। मैंने कहा- मैं तो पहनती नहीं, तो उसने कहा- माँ! मेरी भावना है तुमको साड़ी पहनाने की। मैंने कहा, साड़ी लाया है, बड़ी अच्छी बात है। तो देख लीजिए, स्वयं उसके हृदय ने गवाही दी कि यह माँ है। भक्तों का यह कर्तव्य होता है कि वे अपनी कमाई का कुछ अंश दरबार की सेवा में लगायें। जैसे बड़े-बड़े सेठ होते हैं, जब उनके पास धन ज्यादा हो जाता है, तो बड़े-बड़े मन्दिर बनवा देते हैं। तो लोग कहते हैं कि यह सेठ तो बड़ा धर्मात्मा है। बिल्कुल मोह-माया नहीं है, इतना विशाल मन्दिर बनवा दिया। पर अपने हृदय का जो मन्दिर है, उसमें तो अन्धकार भरा पड़ा है। हृदय के मन्दिर में कभी दीपक नहीं जलाया और बाहर के मन्दिर में ही दीप जलाकर उसे प्रकाशित करता रहा। एक बार मैं मुम्बई गई, वहाँ एक मन्दिर है, जिसे एक सेठ ने बनवाया है। कहते हैं कि कई करोड़ रुपये उसमें लग चुके हैं। बहुत विशाल मन्दिर है तथा उसमें अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं। इतना विशाल मन्दिर तो सेठ जी ने बनवा दिया, लेकिन आत्मा का ज्ञान नहीं होने से हृदय का मन्दिर सूना ही है।

श्री गुरु महाराज जी ने जो तुमको नाम दिया है, वह कभी भी तुम्हारे कार्य में बाधा नहीं डालता है। वह स्वयं स्वाभाविक अपने-आप ही हो रहा है, केवल उसमें मन को टिकाना पड़ता है।

देखो, बाहर जितना भी चाँदना हो जाये, लेकिन गुरु के बिना हृदय के अन्दर चाँदना नहीं हो सकता है। आप लोगों ने मुझे यहाँ बुलाया, यह बहुत अच्छी बात है। आप सबको सत्संग मिल रहा है। वैसे तो मेरे यहाँ आने की उम्मीद नहीं थी, क्योंकि हमारे घर पर बहुत से लोग आये हुए थे, फिर भी आप लोगों के प्रेम और भक्ति भावना को देखते हुए मुझे आना पड़ा। भक्तों के मर्म को समझना बहुत मुश्किल बात है। वे तो स्वयं हृदय को खीचते हैं, उनके हृदय के अन्दर उथल-पुथल होती है।

श्री गुरु महाराज जी ने जो तुमको नाम दिया है, वह कभी भी तुम्हारे कार्य में बाधा नहीं डालता है। वह स्वयं स्वाभाविक अपने-आप ही हो रहा है, केवल उसमें मन को टिकाना पड़ता है। जिन माताओं को समझ में नहीं आया है, ये बाईयाँ हैं, इनसे समझ लें, ये समझा सकती हैं। जिन सज्जनों को ज्ञान लेना हो, ये महात्मा जी यहाँ हैं, कल रमेश के घर में वे लोग आयें। उसने अपना घर दे रखा है आपलोगों की सेवा के लिए। आपलोग वहाँ आकर महात्माओं से पूछें, पूछना चाहिए। भगवान ने इसी पूछने के लिए ही तो मुँह दिया है। अगर वह गूँगा बना देता, तो क्या पूछते। पर फिर भी संन्तों ने कहा कि-

नाम जपत कुष्ठी भला,
चुइ-चुइ पड़े जो चाम।
कंचन देह किस काम की,
जा मुख नाहीं नाम।

अगर शरीर गल गया हो और वह नाम को जपता है, तो वह शरीर कंचन शरीर से भी अच्छा है। तो जिन सज्जनों ने उस नाम को जान लिया है, बहुत अच्छी बात है, वह अभ्यास करें, भजन करें। और जिन लोगों ने नहीं जाना वे सत्संग सुने, समझें।

सठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परस कुधातु सुहाई।।

जिस तरह से गंदा-से-गंदा लोहा भी पारस पथरी के छूने से सोना बन जाता है, इसी तरह सत्संग से आदमी कुछ-से-कुछ बन जाता है। कहा है-

पारस और गुरु में,
बड़ो अन्तरो जान।
वह लोहा से कंचन करे,

गुरु कर ले आप समान।।

उस नाम की व्याख्या में वेद-शास्त्र हार गये, पर उस नाम की महिमा को नहीं गा सके। नामी के पास से उसको जानना चाहिए। हम उस मर्म को जानते हैं। जिन सज्जनों को ज्ञान लेना हो, जिन्हें पहले से जिज्ञासा हो और जो शाखाओं से तैयार होकर आये हों, वे कल इन महात्माओं से जानने की कोशिश करें और जिन सज्जनों को कुछ पूछना हो, अगर फुर्सत न हो तो रविवार को आवें। कहा है कि दरवाजा खटखटाओगे तो खोला जायेगा। दरवाजा नहीं खटखटाओगे तो वे जबर्दस्ती किसी को नहीं देते हैं। डाक्टर तुम्हें जबर्दस्ती दवाई पिला सकता है, जर्बदस्ती इन्जेक्शन लगा सकता है, नली से तुम्हें जूस पिला सकता है, पर आत्मज्ञानी जबतक तुम्हारे अन्दर श्रद्धा नहीं होगी, तबतक आत्मज्ञान नही देगा। कहा है-"श्रद्धावान् लभयते ज्ञानम्।" यह श्रद्धा और प्यार की चीज है। यह प्रेम से ही मिलता है। कहा है- 'प्रेम से प्रकट होये भगवाना।' यह प्रेम का ही सौदा है भाई! इसलिए मीरा ने भी गाया है, महलों की रानी होकर के उसने भी भगवान को याद किया-हे भगवान, हे कृष्ण, मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दर्द जाने न कोय। संसार के लोग क्या जानें कि उसको क्या दर्द था! उस समय भी मीरा को दुनियाँ नहीं पहचान पाई। आज उनके भजन गाते हैं, सबेरे-सबेरे ऑल इंडिया रेडियो से उसके पद सुनाये जाते हैं और सुन-सुनकर लोग झूमते रहते हैं, जब मीरा आई तो गलियों-गलियों में घुँघरू बाँध-बाँध करके अपने भगवान के लिए नाचती रही; उस आनन्द को किस ने नहीं लिया। मीरा को जहर दिया। मीरा को क्या-क्या कष्ट नहीं दिया। एक दफे उसने तुलसीदास जी को लिखा कि मैं बहुत दु:खी हूं इस परिवार से, मैंने बहुत सहन कर लिया, अब मैं क्या करूँ? उसने किसी राजा से राय नहीं ली, परिवार के लोगों से राय नहीं ली, उसने तुलसीदास जी को लिखा। तुलसीदास जी को अपना हितैषी क्यों समझा? क्योंकि वह समझती थी कि जैसे मैं भगवान के लिए दिवानी बन गई हूँ, वैसे ही तुलसीदास भी हैं और वह मुझे जो राय देंगे, वह बिल्कुल ठीक देंगे- जिसमें मेरा हित हो। परिवार का भी हित हो, समाज का भी हित हो। तब तुलसीदास जी ने उसको लिखा कि-

डाक्टर तुम्हें जबर्दस्ती दवाई पिला सकता है, जर्बदस्ती इन्जेक्शन लगा सकता है, नली से तुम्हें जूस पिला सकता है, पर आत्मज्ञानी जबतक तुम्हारे अन्दर श्रद्धा नहीं होगी, तबतक आत्मज्ञान नहीं देगा। कहा है-"श्रद्धावान् लभयते ज्ञानम्।" यह श्रद्धा और प्यार की चीज है। यह प्रेम से ही मिलता है।

जाके प्रिय न राम बैदेही।
तजिअ ताहि कोटि बैरी सम,
जद्यपि परम सनेही।

जो भगवान से दूर करे, उस परिवार को छोड़ देना चाहिए। उसी चौपाई को पढ़ करके वह परिवार छोड़कर भगवान के धाम वृन्दावन को चली गई। मीरा को जब उसके परिवार के लोग ले जाना चाहते थे, तब उसने कहा कि नहीं, तुम मुझे अपने बन्धन से मुक्त करो। मीरा ने गाया- 'मेरा दर्द न जाने कोई'- जो मेरा दर्द है, उसको कोई नहीं जान सकता है। पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे। बाताओ कौन नाच सकता है? और वह भी एक महारानी। पर, भगवान के नाम में उसने अपने को मिटा दिया। जो भगवान के लिए मिटता है, दुनियाँ उसके नाम के गीत गाती है। उसको याद करके, उसके पद गा-गाकर के झूमती है।

इस धर्म को हर एक नहीं समझता, अगर हर एक समझ जाता तो नर्क-स्वर्ग की बात कहाँ रहती? पर हरएक नहीं जानता है। तो जगह-जगह तुमलोग प्रचार करो और हम भी आयेंगे। देखो, यह तो तुमलोग हमारे लिए सजावट कर देते हो, नहीं तो हमें शौक नहीं है ऐसा करने में। हम तो नीचे भी एक समान और ऊँचे भी एक समान- हमें कभी नहीं गर्व होता। हमें कभी कोई बड़ा अच्छा खाना भी खिलाते हैं, पर हमें उसमें भी उतना ही आनन्द है और रूखी रोटी में भी उतना ही आनन्द है। सचमुच में वह तो भक्त अपनी भावना से, अपनी मेहनत और अपनी सेवा का महत्व दिखाते हैं और उनकी इच्छा होती है; इसलिए हमें वैसा करना पड़ता है। देखो, कभी पत्थर का भगवान वस्त्र नहीं पहनता, काहे में पहनेगा? पर भक्त लोग सजाते हैं और अपने मन को रिझाते हैं कि हम अपने भगवान को पहना रहे हैं; वैसे ही हमारे लिए भी भक्त लोग पहनने के लिए एक-से-एक चीज लाते हैं। हमें कोई भी इच्छा नहीं होती। पर फिर भी उनकी इच्छा के मुताबिक वैसा करना पड़ता है। इस समय हजारों जनता वहाँ हमारे घर में आई है, वहाँ हंस जयन्ती मना रहे हैं और फिर भी मैं अपना घर छोड़कर के तुम्हारे यहाँ आयी हूँ। हजारों जनता कल भी वहाँ थी, कल वहाँ बारह बजे तक प्रोग्राम चला। साढ़े ग्यारह बजे मैं प्रवचन करके आई हूँ और सब लोगों को वहाँ रोते छोड़ कर आई हूँ। उनका प्रेम है, प्रेम रुलाता है, नहीं तो वैसे ही कोई थोड़े कोई रोता है। प्रेम से रोना आ जाता है। आप लोग खूब भजन-सुमिरण करें। सुमिरण ही सार है।

संकर भजन बिना नर, भगति न पावहिं मोरि

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनों! सचमुच जब भक्त सच्चे हृदय से अपने प्रभु की महिमा गाता है, तो उस पर भगवान की कृपा भी बरसती है। भक्ति-भाव में सराबोर होकर जब भक्त अपने हृदय के उद्गार प्रकट करता है, तो वही उद्गार शास्त्र बन जाते हैं। आज महाशिवरात्रि का पर्व है, इस दिन भक्तगण शिव की महिमा का गुणगान करते हैं। शिवतत्व ही समस्त वेद-शास्त्रों और पुराणों का निचोड़ है। आत्मज्ञानी उसी तत्व में ब्रह्मा, विष्णु और महेश के दर्शन पाते हैं। सचमुच भगवान शिव की महिमा अनंत हैं। भगवान श्री राम ने अयोध्यावासियों को उसी महामंत्र को जानने की प्रेरणा दी, जिसका जाप भगवान शिव स्वयं करते हैं। उस ज्ञान को ही "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" बताया। भगवान शिव ही सत्य हैं, सत्य ही शिव है और शिव ही सुन्दर है। बड़े-बड़े राजाओं ने भगवान शिव की भक्ति पाने के लिए तपस्या की। रावण ने भगवान शिव की बड़ी कठोर तपस्या की। जितनी बड़ी शिव स्तुति रावण ने गाई कि आज तक कोई पण्डित उस स्तुति को गा नहीं सकता। रावण बहुत बड़ा विद्वान था, उसने शिव की इतनी तपस्या की कि कैलाश पर्वत हिलने लग गया और वहां पर भगवान शिव प्रकट हुए। रावण की कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उसे वरदान दिया। शिव से वरदान प्राप्त करने के बाद रावण को अहंकार हो गया, जो उसके विनाश का कारण बना।

आप भस्मासुर के बारे में जानते हैं, उसने भी तपस्या करके छल से भगवान शिव से आशीर्वाद ले लिया। अहंकार होने पर भस्मासुर का भी अंत हुआ। यह तो भगवान शिव की महानता है कि वे थोड़ी-सी सेवा-भक्ति से प्रसन्न होकर भक्त को मनचाहा वरदान दे देते हैं। भगवान श्री राम जब चौदह वर्ष का वनवास काटने के बाद अयोध्या पहुंचे, तो उन्होंने अयोध्यावासियों को समझाते हुए कहा-

औरउ एक सुगुप्त मत,
सबहि कहउँ कर जोरि।
संकर भजन बिना नर,
भगति न पावहिं मोरि।।

एक गुप्त मत मैं आपको हाथ जोड़कर बताता हूं कि भगवान शंकर के भजन को जाने बिना कोई भी मेरी भक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। रामचरित मानस में संत तुलसीदास जी कहते हैं-

महामंत्र जोई जपत महेसू।
कासी मुक्ति हेतु उपदेसू।।

हमें भगवान शंकर के उस महामंत्र को, भजन को समझना होगा, जिस भजन को उन्होंने स्वयं भी किया और काशी के लोगों को उसका उपदेश दिया, उसका ज्ञान कराया। सारी काशी नगरी भगवान शिव के त्रिशूल पर ही बसी है। उस परम अलौकिक प्रभु की महिमा अनन्त है। भगवान के नाम का ही सबको सहारा है। घर से बाहर निकला हुआ मनुष्य जब तक पुन: अपने घर में नहीं पहुंचता, तब तक उसे खतरा बना ही रहता है। आज का समय बहुत खराब है। चारों तरफ कलिकाल का ही प्रभाव है। पर जो भगवान के सच्चे नाम का सुमिरन करेगा, जो सच्चे हृदय से भगवान की आराधना करेगा, उस भक्त को कोई भी कष्ट नहीं होगा। भक्तों पर कैसा-कैसा कठिन समय गुजरता है, पर भगवान की अदृश्य कृपा उन पर हमेशा बनी रहती है। भक्त कई बार समझता भी नहीं, पर भगवान उस पर अपनी कृपा हमेशा बनाये रखता है।

देखो! सुबह से कितना खराब मौसम हो रहा था। ऐसा लग रहा था, जैसे इन्द्र भी भगवान शिव के दर्शन करने के लिए आये हों। शास्त्रों में आता है कि सारे

देवी-देवता शिवरात्रि पर भगवान शिव के दर्शन के लिए आते हैं और भगवान भी अपने परम प्रिय भक्तों को दर्शन देते हैं। देवी-देवता भी भगवान शिव की आराधना करते हैं। उसका कारण भी यही है कि भगवान शिव आशुतोष हैं, वे ज्ञान के भण्डार हैं, भगवान शिव का जो हृदय है, वह सागर की तरह अथाह है। उसमें से चाहे कोई कितना ही ले जाये, उनके भण्डार में कभी कमी नहीं आती। हम लोगों को गुरु महाराज जी से आत्मज्ञान को जानकर अपने जीवन को धन्य बनाना चाहिए, क्योंकि ज्ञानीजन जो होते हैं, वे ही हृदय के अन्धकार को मिटा सकते हैं। भक्त की प्रार्थना को भगवान भी स्वीकार करते हैं।

उल्लेख आता है कि एक दिन शिवरात्रि का पर्व था। भगवान शिव कहने लगे- पार्वती! इतना बड़ा भक्तों का समूह जा रहा है, क्या तुम जानना चाहती हो कि इनमें कितने भक्त हैं? पार्वती कहती हैं- भगवन! सारा जन-समाज तो आप पर ही जल चढ़ाने जा रहा है, इसलिए ये सब आपके ही तो भक्त हुए। भगवान शिव कहते हैं कि नहीं पार्वती! मैं तुम्हें अभी दिखाता हूँ। भगवान् शिव ने एक कोढ़ी का भेष धारण किया और पार्वती ने एक सुन्दर जवान नारी का। दोनों रास्ते में बैठ गये। आने-जाने वाला कोई भी भगवान को नहीं देख रहा, सब लोग पार्वती को ही देख रहे हैं। कोई उन पर पैसा चढ़ा रहा है, कोई उनसे कह रहा है कि तू हमारे साथ चल। तू इतनी सुन्दर नारी इस कोढ़ी के साथ कैसे लम्बा समय बितायेगी? तुम हमारे घर चलो। किसी ने यह नहीं पूछा कि भगवान तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं, क्या बात है? हम तुम्हारा इलाज करायेंगे। अन्त में वहां एक बुढ़िया माँ आई और पार्वती से कहती है कि बेटी! चल मेरे घर, मैं तेरी और तेरे पति की सेवा करूँगी। तू और मैं दोनों मिलकर सेवा करेंगे। तू पतिव्रता नारी है, जो इतनी विपत्ति में भी पति की सेवा करके उसके साथ अपना जीवन बिता रही है। उसी समय भगवान शिव अपने अलौकिक रूप में आ गये और कहा कि देख पार्वती, इतने सारे लोगों में केवल एक ही सच्ची भक्तिन थी, जिसने सचमुच में तेरे और मेरे को पहचाना।

> आज का समय बहुत खराब है। चारों तरफ कलिकाल का ही प्रभाव है। पर जो भगवान के सच्चे नाम का सुमिरन करेगा, जो सच्चे हृदय से भगवान की आराधना करेगा, उस भक्त को कोई भी कष्ट नहीं होगा।

केवल शिवलिंग पर ठंडे पानी को चढ़ाना ही हम लोग भक्ति समझते हैं। अपने आप तो गर्म पानी से नहाकर जायेंगे और भगवान् शिव पर ठण्डा पानी चढ़ाकर आयेंगे। अपने आप व्रत में दिन भर फल-फूल खाते रहेंगे और भगवान शिव के बारे में कहेंगे कि अरे वे तो धतूरा और भांग खाते हैं, यही उनके मंदिर में चढ़ाकर आते हैं। ये सब तो कर्मकाण्ड हैं। ये तो सारा समाज करता ही चला आ रहा है। पर उस बात पर थोड़ा विचार करें, जिसके लिए कहा कि भगवान त्रिनेत्रों वाला है। वह तीसरी आंख कौन-सी है, जिसके बारे में कहा कि भगवान स्वयं अपने सच्चे नाम का सुमिरण करते हैं और भक्तों को भी वही ज्ञान जानने की प्रेरणा देते हैं।

जब भगवान श्रीकृष्ण का अवतरण हुआ तो भगवान शिव उनके दर्शनों के लिए अपने ही भेष में गये, पर माता यशोदा उनको उनके पास जाने नहीं देती हैं। यशोदा कहती हैं-"सर्पों की माला से मेरा लाल डर जायेगा। तू जोगी है, तेरे शरीर से सर्प लिपटे हैं, तेरे को देखकर मेरा बालक डर जायेगा।" भगवान शिव कहते हैं कि नहीं! तू मुझे जाने दे। त्रेतायुग में जब भगवान श्री राम का विवाह हो रहा था, तो भगवान शिव भेष बदलकर श्री राम का विवाह देखने के लिए आते हैं। हर युग में जब-जब भगवान आये, तब-तब भगवान शिव भी हमेशा आये। वे हमेशा अजर-अमर और अविनाशी की तरह मौजूद रहे।

कलिकाल में कितना खराब समय चल रहा है। इस समय तो सतयुग, त्रेता और द्वापर युग से ज्यादा भगवान के नाम का सुमिरण करने की जरूरत है। इस कलिकाल में अगर हम लोग भजन-सुमिरन नहीं करेंगे, भगवान की याद नहीं करेंगे, तो हमें विनाश से बचाने वाला कोई नहीं है। मां भी अपने बेटे को नहीं बचा सकती है। आज पति अपनी पत्नी को नहीं बचा पा रहा है। केवल भगवान ही है, जो सबके प्राणों का पति है और अपने भक्त को संकट से बचा सकता है। हमारे धर्मशास्त्रों में संत-महापुरुषों की बहुत महिमा गाई गई है। जो-जो बातें संत-महापुरुषों ने बताईं, वे सब आज इस कलिकाल में देखने को मिल रही हैं। ऐसे भयंकर समय में सब लोगों को भगवान के सच्चे नाम का सुमिरन करना चाहिए।

हम रोज आरती के बाद कहते हैं कि- त्वमेव माता च पिता त्वमेव, बन्धु भी तू ही है, सखा भी तू है। हम लोग इस प्रार्थना से अपने दिन की शुरूआत करते हैं, क्योंकि वही परमपिता परमात्मा

सच्चा रक्षक हैं। आज इस समाज में जो रक्षक कहलाते हैं, वे ही भक्षक बन गये हैं; तो हमारी रक्षा कौन करेगा? देखो! आज सारे विश्व में शिव जी के मंदिर पर सब लोग जल चढ़ायेंगे और कितनी बेचारी माताओं की जंजीरें लूटी जायेंगी, कितने बेचारे धक्का-मुक्की और कुचलने से घर ही वापिस नहीं आयेंगे। सचमुच भगवान की आराधना तो सबसे पहले हमें अपने हृदय में करनी चाहिए। भगवान भी यही कहते हैं कि जो मेरा सच्चे हृदय से निरन्तर सुमिरन करता है, वही भक्त मुझे परमप्रिय है। दिन-रात में हम इक्कीस हजार छः सौ बार स्वांसों को लेते हैं। और जानते ही नहीं हैं कि उन स्वांसों की कीमत क्या है? अपने मन को कहां पर लगायें? भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं कि हे अर्जुन! दसों इन्द्रियों से तू युद्ध कर और ग्यारहवें मन से तू मेरा सुमिरन कर। सभी महापुरुषों ने मन को भजन-सुमिरन की तरफ लगाने को कहा। जब मन ही नाम में नहीं लगाया, तो सच्चा भजन कहां हुआ? मुंह से कह रहे हैं 'ऊँ नमो शिवाय।' महात्मा कबीर कहते हैं कि-

माला तो कर में फिरे,
जीभ फिरे मुख माहिं।
मनुवॉ तो दसों दिश फिरे,
यह तो सुमिरन नाहिं।।

लोग मंदिर में जा रहे हैं, पर उनका मन पता नहीं कहां-कहां संसार के ख्यालों में घूम रहा है। संतों ने कहा- यह सच्चा सुमिरन नहीं है। इसलिए आज शिवरात्रि का पर्व भक्त लोगों के लिए बड़ा भाग्यशाली दिन है कि भगवान शिव के पर्व पर दर्शन-सत्संग का आनन्द मिल रहा है। इस रहस्य को कोई-कोई ही समझ सकता है।

एक बार की बात है। एक पण्डित था। वह रोज सवेरे भगवान शिव के मंदिर में जल चढ़ाने जाता था। उसके साथ में एक दुष्ट भी जाता था। भगवान को वह नहीं मानता था। वह नास्तिक था। एक दिन बहुत बारिश हुई। नदी में भयंकर तूफान आ गया। पण्डित तो सुबह से इस इंतजार में था कि कब बारिश रुकेगी, कब तूफान बन्द होगा, तब मैं भगवान शिव पर जल चढ़ाऊँगा और उस दुष्ट व्यक्ति ने सोचा कि शायद आज बारिश से पहले ही पण्डित जी जल चढ़ाकर आ गये। दुष्ट मंदिर में पहले ही पहुँच जाता है और पण्डित उस दिन बारिश के कारण वहाँ पहुँचा ही नहीं। जैसे ही वह दुष्ट मूर्ति पर थूकता है, वैसे ही भगवान शिव प्रकट हो गये और कहते हैं- तेरा नियम पक्का था, तू व्रत का नियम से पालन करता था, तूने आज तूफान नहीं देखा, अथाह नदी का पानी नहीं देखा। नदी में बाढ़ आ गई थी, तूने वह भी नहीं देखा! जबकि पण्डित तूफान और पानी से डर गया, वह मौत से भय खा गया, पर तेरा नियम प्रबल था, मैं प्रसन्न हूँ। इस प्रकार भगवान शिव ने उसको दर्शन दे दिए और जब भगवान के उसे दर्शन हो गये, तो वह नास्तिक आस्तिक बन गया। वह शक्ति को पहचान गया और भगवान के चरणों में लिपट गया। कहा कि प्रभु, मैंने तुम्हें जाना नहीं। अब मुझे अपनी शरण में ले लो। मैं आज समझ गया कि भगवन्, तू तो सब जगह विद्यमान है। इसलिए कहा है-

जर्रे जर्रे में है झांकी भगवान की,
किसी सूझ वाली आंख ने पहचान की।

एक भक्त ऐसा होता है जो भगवान की दिखावटी भक्ति करता है। दूसरा भक्त वह है जो एक निष्ठा से, लगन से, निष्कपट भाव से सेवा-भजन करता है। उसको भगवान के जरूर दर्शन होते हैं और भगवान उस पर कोई कष्ट व आंच नहीं आने देते हैं। वे उसकी परीक्षा भी लेते हैं, पर उसके साथ हमेशा रहते हैं। इसलिए हम अपने प्रभु को तभी प्रसन्न कर सकते हैं, जब हम अपने मन की डोर उसके हाथों में सौंप दें, उनके चरणों में हम अपना मन निरन्तर लगाकर रखें, मन को हम सांसारिक बातों में न भटकने दें। कछुए को बाहर से जब प्रहार होने का डर रहता है, तो वह अपने अंगों को अपने अन्दर समेट लेता है। इसी तरह मनुष्यों को भी कहा कि तुम माया में लीन न हो, बल्कि माया तो खराब रास्ते पर ले जाती है और भक्ति परमपद तक पहुंचाती है। भक्ति हमें प्यारी होनी चाहिए। हमें माया प्यारी नहीं होनी चाहिए। जो भक्ति में लीन रहता है, वही भक्त भगवान को प्यारा है। आज शिवजी का पर्व है। आप लोगों ने भी व्रत रखा होगा। पेट में तो भूख सता रही होगी, पता नहीं कि कब खाना खायेंगे, पर भगवान शिव ने अपने भक्तों के कल्याण के लिए हलाहल विष (जहर) को ही पी लिया। और विनाश से अपने भक्तों को बचाया और देवताओं की अमृतपान कराया। उस परम प्रभु की महिमा हमें समझनी चाहिए।

> भगवान शिव आशुतोष हैं, वे ज्ञान के भण्डार हैं, भगवान शिव का जो हृदय है, वह सागर की तरह अथाह है। उसमें से चाहे कोई कितना ही ले जाये, उनके भण्डार में कभी कमी नहीं आती।

SPIRITUAL DISCOURSES-SCARCE IN THIS WORLD

MATA SHRI MANGLA JI

Dear Premies, You all are listening to the spiritual discourses so peacefully, that it seems as if Kalikal (the Age of Darkness) has no impact. While this Dark Age is identified to have abundant powers, our Saints tell us that its force is nullified on those who constantly remember the Holy Name. It must surely be the great karmas from our previous lives that we are bestowed with human forms. Different pleasures of life can be experienced by other life forms but God's Holy Name can be realized only in human birth.

God made man and gave him the ability to think, to understand and gave him hands and legs to perform dutiful Karma. So what is the right thing for any man to do?

"Ram is in you and in me,
He is indeed in everyone.
Love each one equally,
As no one is a stranger."

When the spirit of God resides in each person, then why differentiate among them? Those who do not understand this fact, create artificial barriers to divide people. A seer breaks these barriers down to unleash the internal divine unity. But only those who offer their mind and thoughts to Guru Maharaj Ji get these benefits. In Ramcharit Manas it is said:

"Man should perform various Karmas through his body,
But rest all his thoughts on The Almighty"

Our spiritual earnings are the true rewards that will go with us to the next life. Worldly possessions are all left behind. When the soul leaves this body, even the family tries to conduct the final rites in a timely manner. When the person is alive, he gets great love from his family but the same family eagerly sends the dead one to the cremation grounds.

What is that energy, divinity that runs the body? Saints and spiritual teachers talk about this soul only. What you desire to obtain from these great teachers is a question that deserves deep thought. Some ask for increased profit in their business, others ask for children, yet others ask for health and well being of their loved ones. But the ideal thing to ask for is devotion! Saints have said:

"Children, wife and wealth are found in all households,
But privileged ones get company of Saints and enjoy spiritual discussions."

You are truly fortunate to participate in this spiritual gathering. To get Darshan and to hear spiritual discourses is a matter of great luck. You must have seen Ramayan on television. Kaakbhusundi Ji was enjoying the childhood plays of Lord Ram. Ram was pulling a piece of bread, and Kakbhusundi Ji was pulling it from the other side. When he pulled it to the other side, Lord Ram started crying for the piece of bread. This small event caused confusion to Kakbhusundi and he thought how could the King of three worlds be crying for a piece of mere bread?

The crow then flew to Lord Shankar who gave him spiritual guidance that when God comes to earth in human form (of Lord Ram), then he would

behave as a human only. Then he understood.

Lord Ram also presented his true form to Kakbhusundi Ji and gave him a boon to ask for anything, be it happiness, long life or popularity. The crow replied that all of these things would end in due course of time. A rich person would one day spend all his wealth. Long life is of no use, as one has to die some day. Youth also doesn't stay forever. So he asked God to bless him with service and gift to enjoy the God's play (Leela) on earth. Lord Ram acknowledged the sharpness of his mind and blessed him with divine bliss and devotion.

There are many who sing poems and songs in God's praise but can't explain the true meaning of these words. But wise teachers explain the hidden meanings. A true devotee is not bothered by self-ego and offers his full services at the feet of his teacher.

During the spiritual discourse, Kabirdas Ji once said that there is a devotee who offered his entire wealth but in spite of that couldn't become a true disciple. King Dharamdas had offered his great wealth to the teacher. He left his kingdom and used to live across the teachers cabin in a hut to get a glimpse of his teacher day and night. On hearing the discourse, Dharamdas went to Kabirdas Ji and requested that he be told as to what prevented him from becoming a true devotee, a true disciple. Kabirdas Ji told him that there must be some form of weakness that he sees himself as different, as non-united with the teacher. Dharamdas understood the lesson.

We sow seeds in the farms. The seed looses its identity in the soil and then transforms into a seedling, and later becomes a tree. It then gives fruit and shade to others. Similarly, you should turn yourself into such seeds that loose its own identity to bring joy and happiness to others. With Guru Maharaj Ji's blessings we are fortunate to know Holy Name, which can evolve man to great heights.

When there is a thread in the needle then it is easily found. Similarly, without the thread of Holy Name, we will get lost in materialism and worldly charms. But the one who knows Holy Name always rests his thoughts on God's feet. Even if he gets lost for a little while, but listening to spiritual discourse will awaken his understanding and bring him back on the path. It is said that one should repeatedly listen to the discourses and teachings of Ram, Krishna, Kabir and other Saints. Without this, man will get lost in this world. Listening to spiritual discourses is like charging the battery of your soul. Discourses awaken the dormant qualities of man.

In these discourses you are prompted for service in Guru's Ashram. Saints awaken us to spread the divine flame by conducting more spiritual gatherings. Our preachers put great efforts starting from a young age. You may not be able to walk for a mile and they travel ten miles to organize spiritual sessions and to share their learning. They are truly blessed by Guru Maharaj Ji. It is said:

"He who remembers God himself,
And in addition helps other meditate too.
Guru Nanak says that he will surely get liberation"

Man gets lost in the proceedings of this world because of its splendor. Saints and teachers come to this world and act like that thread of the needle that prevents it from getting lost. Those who know how to swim will cross the river. Others will drown and loose their lives. Guru Maharaj Ji teaches us the techniques of crossing this ocean of life and death. It is said:

"The language of Saints may seem confusing,
No one gets it easily.
And the one who understand it quickly,
Will soon see God in all His glory"

सरस्वती-पूजा का पर्व वसंत पंचमी है खगोलीय गणना का भी मानक मुहूर्त

वसंत पंचमी का पर्व जिसे वसंतोत्सव व सरस्वती पूजा के रूप में मनाया जाता है, हमारी सनातन संस्कृति में एक अत्यंत महत्वपूर्ण तिथि है। यह पर्व हर साल माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है, और इस दिन देवी सरस्वती की पूजा की जाती है, जो कि ज्ञान, संगीत, कला और संस्कृत की देवी मानी जाती हैं। इसके साथ ही, इस पर्व का खगोलीय गणना में भी विशेष महत्व है, जो न केवल धार्मिक आस्था को दर्शाता है, बल्कि प्रकृति के चक्रों और उनके प्रभावों को भी समझने में सहायक है।

बसंत पंचमी प्रकृति का पर्व है। इसी दिन से ऋतुराज वसंत का आगमन होता है। वृक्ष पुराने पत्ते गिराकर नए कोपल विकसित करने लगते हैं। कोयल की कूक और आम मंजरी के साथ महुआ के फूलों की मादक सुगंध से सारा वातावरण महक उठता है। इसलिए बसंत पंचमी को प्रकृति का पर्व कहा गया है। इस दिन से सूर्य की किरणें तेज होनी शुरू हो जाती हैं, ताकि सोने के समान गेहूं की बालियां पक जाएं और लोगों के घर धन-धान्य से भर जाएं। खेतों में सरसों के पीले फूलों की सुंदरता को बसंत पंचमी के पीले रंग के प्रतीक से जोड़ दिया गया है।

वसंत पंचमी, वास्तव में वसंत ऋतु की शुरुआत का प्रतीक है। भारतीय पंचांग में यह समय वर्ष के सबसे ठंडे दिनों के समाप्त होने का संकेत देता है और दिन के बढ़ने का प्रारंभ होता है। खगोलीय दृष्टि से, यह दिन सूर्य के मकर राशि से निकलकर कुम्भ राशि में प्रवेश करने का समय होता है, जिसे उत्तरायण भी कहा जाता है। इस समय दिन की अवधि बढ़ने लगती है और रातें छोटी होने लगती हैं।

मौसम में यह बदलाव जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के जीवन चक्र को भी प्रभावित करता है। कृषि के दृष्टिकोण से भी, यह समय फसल बुवाई के लिए अत्यधिक अनुकूल होता है। इस पर्व के समारोहों में विशेष रूप से यह ध्यान रखा जाता है कि लोग प्रकृति के प्रति सम्मान प्रकट करें और नवीनता का स्वागत करें, जो जीवन और विकास का प्रतीक है।

शिक्षा और संस्कृति के प्रतीक वसंत पंचमी पर्व को स्कूलों में सरस्वती पूजा के रूप में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। इस दिन विद्यार्थीगण देवी सरस्वती की पूजा बड़ी श्रद्धा से करते हैं। क्योंकि ऐसी मान्यता है कि इस दिन की आराधना से विद्या और बुद्धि में वृद्धि होती है। सभी सनातनी विचारधारा वाले शिक्षण संस्थानों में इस दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है, जिसमें छात्र और शिक्षक मिलकर ज्ञान की देवी सरस्वती की आराधना कर उनके प्रति अपनी भक्ति निवेदित करते हैं। वसंत पंचमी पर्व का ज्ञान की देवी सरस्वती की आराधना से गहरा संबंध है। यह पर्व विद्यार्थियों को प्रेरित करता है कि वे अपने शिक्षा के पथ पर दृढ़ता से आगे बढ़ें और अपने ज्ञान में वृद्धि करें। सरस्वती पूजन का यह उत्सव हमें यह भी याद दिलाता है कि ज्ञान ही सच्चे जीवन का मार्ग है, और इसे प्राप्त करने के लिए परिश्रम आवश्यक है।

इस पर्व को उल्लासपूर्वक मनाने के लिए विभिन्न स्थानों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। संगीत, नृत्य, और कला के विभिन्न रूपों का प्रदर्शन इस पर्व की रौनक को बढ़ाता है। विद्यालयों, कॉलेजों और स्थानीय सामुदायिक केंद्रों में आयोजित कार्यक्रमों में प्रतिभागी अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं, जिससे नई प्रतिभाओं को मंच मिलता है। वसंत पंचमी का यह सांस्कृतिक स्वरूप भारतीय परंपराओं की विविधता और समृद्धि को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, इस दिन विशेष रूप से पीले वस्त्र पहनने की परंपरा है, जो वसंत ऋतु और समृद्धि का प्रतीक है। पीला रंग, जो सरसों के फूलों में देखा जाता है, एक नए आरंभ का प्रतीक है और यह जीवन में खुशहाली और प्रगति का संकेत देता है।

वसंत पंचमी केवल सरस्वती की आराधना का पर्व नहीं है, बल्कि यह खगोलीय गणना और भारतीय संस्कृति के साथ गहराई से जुड़ा हुआ तिथि खगोलीय काल गणना का मानक मुहूर्त है। यह पर्व हमें ज्ञान की देवी से प्रेरित होने का अवसर प्रदान करता है और हमें प्रकृति के चक्रों और उनके प्रभावों के प्रति जागरूक करता है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार, बसंत पंचमी को अबूझ मुहूर्त माना जाता है, यानी यह साल के उन खास दिनों में है, जिस दिन बिना पंचांग देखे कोई भी शुभ कार्य किया जा सकता है। इस दिन ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति विशेष रूप से अनुकूल होती है। बसंत पंचमी के दिन चंद्रमा भी शुभ स्थिति में होता है, जिससे मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति होती है। इस दिन अनिवार्य रूप से पीले परिधान पहने जाते हैं, जो बृहस्पति ग्रह का प्रतीक है और इससे ज्ञान, शुभता और सौभाग्य की प्राप्ति होती है। वसंत पंचमी का स्वागत करते हुए, हम शिक्षा, कला, और संस्कृति के प्रति अपनी आस्था को व्यक्त करते हैं, जो हमारे जीवन और समाज के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसा करके, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हम ज्ञान के मार्ग पर आगे बढ़ते रहें और अपने समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास करें।

भारतीय पंचांग के अनुसार, बसंत पंचमी हर साल माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाई जाती है। साल 2025 में माघ पंचमी तिथि 2 फरवरी को सुबह 9 बजकर 14 मिनट से शुरू होगी, जो अगले दिन यानी 3 फरवरी को सुबह 6 बजकर 52 मिनट तक रहेगी। इसलिए इस वर्ष सरस्वती पूजा रविवार 2 फरवरी को मनाई जाएगी। वहीं बहुत से लोग उदयातिथि के आधार पर इसे 3 फरवरी को भी मनाएंगे। इस प्रकार साल 2025 में सरस्वती पूजा 2 दिन मनाई जा सकती है। इस दिन विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा की जाती है। मां सरस्वती का एक नाम 'श्री' भी है, इसलिए इस दिन को 'श्री पंचमी' भी कहते हैं। बसंत पंचमी के दिन मां सरस्वती से बुद्धि और ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की जाती है। संगीत, कला और साहित्य से जुड़े लोग इस दिन माता सरस्वती की विशेष पूजा करते हैं।

वसंत ऋतु, ऋतुओं की राजा है। यह एक ऐसी ऋतु है जिसमें न अधिक सर्दी होती है और न अधिक गर्मी। यह एक ऐसी ऋतु है जिसमें अधिक-से-अधिक शारीरिक और मानसिक श्रम करने के साथ-साथ हम आध्यात्मिक साधना कर सकते हैं। ज्ञान की देवी सरस्वती से जुड़ा यह पर्व हमें ज्ञान-साधना को बढ़ाकर ज्ञान अर्जित करने की प्रेरणा देता है, यही वसंत पंचमी मनाने का मुख्य उद्देश्य है। ■

विरक्तों के अद्भुत लक्षण और कर्तव्य

स्वामी समर्थ रामदास जी अपने प्रसिद्ध ग्रंथ दासबोध में विरक्तों के लक्षणों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि विरक्तों को सदैव सद्गुणों को ग्रहण करते रहना चाहिए। उनका कहना है कि विरक्तों में विवेक होना चाहिए, उन्हें आत्मज्ञान बढ़ाना चाहिए और विषयों या इन्द्रियों का दमन करने के लिए धैर्य से काम लेना चाहिए। उन्हें साधना के मार्ग पर दृढ़ रहना चाहिए, लोगों को ईश्वर-भजन में लगाना चाहिए और अपने सत्संग के माध्यम से ब्रह्मज्ञान प्रकट करना चाहिए। विरक्तों को भक्ति बढ़ानी और शान्ति दिखलानी चाहिए और बलपूर्वक अपना वैराग्य बढ़ाना चाहिए। उन्हें अपने जीवन में सत्क्रियाएं प्रतिष्ठित करनी चाहिए, निवृत्ति बढ़ानी चाहिए और दृढ़ता पूर्वक सब प्रकार की आशाओं का परित्याग करना चाहिए। विरक्त को धर्म की स्थापना करनी चाहिए, नीति का अवलम्बन करना चाहिए और आदर पूर्वक क्षमा-भाव ग्रहण करना चाहिए। उसे परमार्थ उज्ज्वल करना चाहिए, खूब मनन और विचार करना चाहिए और अपने पास सन्मार्ग तथा सत्वगुण रखना चाहिए। विरक्त को भावुकों को ठीक मार्ग पर रखना चाहिए, प्रेमियों को सन्तुष्ट करना चाहिए और शरण में आये हुए सीधे तथा भोले-भाले लोगों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उसे परम ज्ञान में दक्ष तथा अन्तःकरण का साक्षी भाव वाला होना चाहिए और सदा परमार्थ का पक्ष लेना चाहिए। उसे भजन-अभ्यास या अध्ययन तथा उद्योग करना चाहिए और उसे मानव समाज में गिरे हुए परमार्थ को अपने सतसंग के द्वारा फिर से खड़ा करना चाहिए। उसे विमल ज्ञान की बातें कहनी चाहिए, वैराग्य की स्तुति करनी चाहिए और निश्चित रूप से सबकी शंकाओं का समाधान करना चाहिए। उसे आध्यात्मिक पर्वों पर उत्सव करने चाहिए, भक्तों के समारोह आयोजित करने चाहिए और प्रयत्न पूर्वक उपासना मार्ग के वे सभी कृत्य करने चाहिए, जिससे मानव के हृदय में प्रभु भक्ति बढ़े। उसे हरि-कीर्तन और परमार्थ निरूपण की व्यवस्था करनी चाहिए और निंदक तथा दुर्जनों को भी भक्ति मार्ग पर लाने का प्रयास करना चाहिए। उसे बहुत से लोगों में परोपकार और सज्जनता का जीर्णोद्धार कर प्रयत्न पूर्वक पुण्य मार्ग का विस्तार करना चाहिए।

विरक्त को पवित्रता पूर्वक स्नान, सन्ध्या, जप, ध्यान, तीर्थ-यात्रा, भगवद्-भजन नित्य-नियम से करना चाहिए और अपना अन्तःकरण शुद्ध रखना चाहिए। उसे सत्य-मार्ग के प्रति दृढ़ निश्चय धारण करना चाहिए, संसार को सुख पूर्वक बनाना चाहिए और अपने संसर्ग मात्र से विश्व भर के लोगों का

उद्धार करना चाहिए। उसे धीर, उदार, और निरूपण के विषय में तत्पर होना चाहिए। उसे सावधान रहना और शुद्ध मार्ग पर चलना चाहिए और सत्कर्म करते हुए उज्ज्वल कीर्ति के साथ जीवन व्यतीत करना चाहिए। उसे दूसरे विरक्तों को ढूंढ़कर उनके साथ वास करना चाहिए। विरक्त को सच्चे साधुओं को पहचानना और सन्तों, योगियों तथा सज्जनों को अपना मित्र बनाना चाहिए। उसे सांसारिक कार्यों में सम्मिलित होते हुए भी उदासीन वृत्ति नहीं छोड़नी चाहिए और किसी विषय में दुराशा नहीं उत्पन्न होने देनी चाहिए। उसे अपने अन्त:करण में परमात्मा के प्रति निष्ठा और विश्वास रखना चाहिए, क्रिया-भ्रष्ट न होना चाहिए और इन्द्रियों के पराधीन होकर तुच्छ नहीं बनना चाहिए। उसे विवेक पूर्वक समय देखना और प्रसंग समझना चाहिए और सब प्रकार से चतुर होना चाहिए। उसे एकदेशी नहीं होना चाहिए, सब विषयों का अध्ययन करना चाहिए और प्रत्येक विषय का पूरा-पूरा ज्ञान रखना चाहिए। उसे हरिकथा का निरूपण, सगुण भजन, ब्रह्म-ज्ञान, पिण्ड-ज्ञान, तत्व-ज्ञान आदि सब कुछ जानना चाहिए। उसे कर्म मार्ग, उपासना मार्ग, ज्ञान मार्ग, सिद्धान्त मार्ग, प्रवृत्ति मार्ग, निवृत्ति मार्ग, प्रेमपूर्ण स्थिति, उदासीन स्थिति, योग स्थिति, ध्यान स्थिति, विदेह स्थिति, सहज स्थिति आदि सब कुछ जानना चाहिए। उसे हठयोग, मुद्रा, आसन आदि के प्रयोग, मन्त्र, यन्त्र, विधि-विधान आदि का ज्ञान होना चाहिए और अनेक मतों का विधान भी समझना चाहिए।

विरक्त को संसार के सब लोगों का मित्र, स्वतन्त्र और अनेक गुणों से युक्त होना चाहिए और सांसारिक माया के फेर में पड़े हुए लोगों की दृष्टि में विचित्र और विलग होना चाहिए। उसे पूर्ण विरक्त, हरि-भक्त और अलिप्त रूप से नित्य मुक्त होना चाहिए। उसे शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए, मिथ्या मतों को भलीभाँति समझ करके उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए और मोक्ष की इच्छा रखने वालों को सत्य मार्ग पर लाना चाहिए। उसे लोगों को सत्य मार्ग की बातें बतलानी चाहिए, संशयों का नाश करना चाहिए और सारे संसार के लोगों को अपना बनाना चाहिए। उसे साधकों का प्रबोध करना चाहिए और सांसारिक बन्धन में पड़े हुए लोगों को मोक्ष का मार्ग बतलाकर उन्हें उसके प्रति चैतन्य करना चाहिए। उसे अच्छे गुणों का ग्रहण और बुरे गुणों का त्याग करना चाहिए और अपने विवेक के बल से अनेक प्रकार की बुरी बातों का नाश करना चाहिए। विरक्तों को इन सब उत्तम लक्षणों को ग्रहण करना चाहिए। यदि ये उत्तम लक्षण ग्रहण न किये जायें, तो बुरे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं और ज्ञानी मनुष्य भी मूर्ख बन जाता है।

इसलिए विरक्त को जीवन पर्यन्त अपने संकल्प को पूर्ण करने के लिए स्वामी समर्थ रामदास जी के इस दिव्य उपदेश को दृढ़ता से अपने हृदय में धारण करना चाहिए, यही उसकी सार्थकता का हेतु बनेगा। ■

प्रेरक प्रसंग

कद्दू की तीर्थ यात्रा

महाराष्ट्र में एक संत हुए हैं तुकाराम। वह सहज भाव के थे; इसलिए लोग उन्हें घेरे रहते थे। एक बार गांव के कुछ लोग तीर्थ यात्रा पर जा रहे थे। उन्होंने तुकाराम को भी साथ चलने का आग्रह किया। यात्रा पर जाने में हर तरह से असमर्थता जताने के बावजूद लोग मानने को तैयार नहीं थे। उन्होंने थोड़ी देर सोच-विचार के बाद कहा, 'देखो भाई, मेरा एक बहुत जरूरी काम है, मैं तीर्थ यात्रा पर नहीं जा पा रहा हूँ। ऐसा करो, मेरे बदले मेरा यह कद्दू साथ ले जाओ। जहाँ-जहाँ स्नान करो, इसे भी करा देना और इसे भी सभी पवित्र स्थानों पर ले जाना।' आखिर सहमति जताते हुए तीर्थ यात्रा पर जाने वाली टोली ने उस कद्दू को साथ ले लिया। वे जहाँ-जहाँ स्नान करते, जिस पवित्र स्थल पर जाते, कद्दू को भी साथ ले जाते। लंबी यात्रा के बाद सभी गांव लौट आए। उन्होंने तुकाराम से मुलाकात की और उन्हें वह कद्दू सौंप दिया। तुकाराम ने कहा, 'तुम सब तीर्थ यात्रा से लौटे हो, मैंने एक भोज का आयोजन किया है।' उनके आमंत्रण पर दूसरे दिन तय समय पर सभी लोग पहुँच गए।

तुकाराम ने उस कद्दू की सब्जी और साथ में अन्य व्यंजन भी बनवाए। कद्दू की सब्जी कड़वी लग रही थी। इसलिए उसे छोड़कर लोग अन्य व्यंजनों का आनंद ले रहे थे। तुकाराम ने कहा, 'आपलोग कद्दू की सब्जी क्यों नहीं खा रहे?' सबने कहा, 'कद्दू की सब्जी कड़वी लग रही है।' तुकाराम बोले, 'यह वही कद्दू है, जिसे आपलोग तीर्थ यात्रा पर ले गए थे। इतने तीर्थ करने और पवित्र नदियों में धोए जाने के बाद भी इसका स्वाद नहीं बदला।' कद्दू का उदाहरण देते हुए उन्होंने सभी भक्तों को समझाया कि भले ही हम लाख तीर्थ यात्रा कर लें, यदि हमारा मन नहीं बदला और इस कद्दू के समान अंदर से कड़वा ही बना रहा, तो कोई फायदा नहीं। इसलिए अन्दर की कुटिलता को दूर भगाओ, तभी सभी प्रकार के दान, पुण्य, स्नान, ध्यान और तीर्थ यात्रा सफल होगी। ■

सदाशिव सर्व वरदाता

सदाशिव सर्व वरदाता, दिगंबर हो तो ऐसा हो।
हरे सब दुःख भक्तन के, दया कर हो तो ऐसा हो।। टेक।।
शिखर कैलास के ऊपर, कल्पतरुवों की छाया में।
रमे नित संग गिरिजा के, रमणधर हो तो ऐसा हो।। 1।।
शीश पर गंग की धारा, सुहावे भाल में लोचन।
कला मस्तक में चंदर की, मनोहर हो तो ऐसा हो।। 2।।
भयंकर जहर जब निकला, क्षीरसागर के मंथन से।
धरा सब कंठ में पीकर, विषंधर हो तो ऐसा हो।। 3।।
सिरों को काटकर अपने, किया जब होम रावण ने।
दिया सब राज्य दुनियां का, दिलावर हो तो ऐसा हो।। 4।।
किया नंदी ने जा बन में, कठिन तप काल के डर से।
बनाया खासगण अपना, अमर कर हो तो ऐसा हो।। 5।।
बनाये बीच सागर में, तीन पुर दैत्य सेना ने।
उड़ाये एक ही शर सें, त्रिपुरहर हो तो ऐसा हो।। 6।।
देव नर दैत्य गण सारे, जपें नित नाम शंकर का।
वो ब्रह्मानंद दुनियां में, उजागर हो तो ऐसा हो।। 7।।

महाकुम्भ-2025, प्रयागराज में होगा विशाल 'नेत्र कुम्भ' का आयोजन

नई दिल्ली। डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर, जनपथ में 12 नवंबर मंगलवार को प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित होने वाले महाकुंभ, प्रयागराज के दौरान नेत्र कुंभ आयोजित करने पर विस्तृत चर्चा की गई। तत्पश्चात नेत्र कुंभ का औपचारिक उद्घाटन भी किया गया।

नेत्र कुंभ को लेकर हुई इस व्यापक चर्चा में द हंस फाउण्डेशन के प्रेरणास्रोत डॉ. माताश्री मंगला जी, परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल जी सहित बड़ी संख्या

कि द हंस फाउण्डेशन आदि संगठनों के सौजन्य एवं सहयोग से प्रयागराज में सेवाभावी डॉक्टर एवं प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।

ज्ञातव्य है कि चर्चा में बताया गया अर्द्धकुंभ-2019 में आयोजित नेत्र कुंभ में लगभग 2 लाख से अधिक लोगों की आँखों की जांच की गई और 1,56,020 रोगियों को चश्में वितरित कर लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में उपलब्धि दर्ज कराई गई थी। विभिन्न संगठनों के सहयोग से आयोजित नेत्र कुंभ की यह एक बड़ी सफलता थी।

तत्पश्चात वर्ष-2021 में हरिद्वार, उत्तराखण्ड में आयोजित महाकुंभ-2021 में भी दो स्थानों पर नेत्र कुंभ का आयोजन किया गया। कोरोना महामारी के पश्चात भी द हंस फाउण्डेशन के सहयोग से समस्त व्यवस्थाएं व्यापक स्तर पर की गयीं जिससे उस नेत्र कुंभ से हजारों-हजार साधु-संतों एवं तीर्थ-यात्रियों ने नि:शुल्क आंखों की जाँच कराने के साथ चश्में भी प्राप्त किये। विपरीत परिस्थिति में आयोजित इस नेत्र कुंभ में चिकित्सकों एवं पैरामेडिकल

महाकुंभ-2025, प्रयागराज में 12 जनवरी से 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित होने वाले विशाल नेत्रकुंभ का उद्घाटन करते हुए परमपूज्य श्री भोले जी महाराज, डॉ. माताश्री मंगला जी, डॉ. कृष्ण गोपाल जी तथा आयोजन समिति के पदाधिकारीगण

स्टाफ द्वारा जरूरतमंदों की सेवा करने से परमसंतोष तो प्राप्त हुआ ही, साथ ही आगामी आयोजनों में सेवा के प्रति हार्दिक उत्साह भी जाग्रत हुआ।

आयोजन समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पिछले प्रयागराज नेत्र कुंभ का हमने स्वयं वहां पहुंच कर निरीक्षण किया था। दिलाते हैं कि इस जनकल्याण के पुनीत कार्य में हमारी ओर से हर प्रकार का भरपूर सहयोग रहेगा। हमें आप सबके सहयोग से कुंभमेला में आये हजारों-

महाकुंभ-2025, प्रयागराज में 12 जनवरी से 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित होने वाले विशाल नेत्रकुंभ के उद्घाटन समारोह में पधारने पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज का स्वागत करते आयोजन समिति के पदाधिकारी तथा समारोह को संबोधित करती हुई डॉ. माताश्री मंगला जी

नेत्र कुंभ आयोजकों, सेवाभावी चिकित्सकों, पैरामेडिकल स्टाफ आदि के उत्साह का ही परिणाम है कि महाकुंभ-2025, प्रयागराज में वृहद स्तर पर नेत्र कुंभ आयोजित करने का संकल्प लिया गया। द हंस फाउण्डेशन ऐसे चुनौतीपूर्ण सेवाकार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेता रहा है। परमपूज्या माताश्री मंगला जी का कहना है कि सेवा का अवसर मिलने पर उसे हाथ से नहीं जाने देना ही हमारा कर्तव्य है। यदि परमपिता परमात्मा ने हमें शक्ति, सामर्थ्य और सद्बुद्धि प्रदान की है तो उसका उपयोग उसकी बनाई सृष्टि को सजाने-संवारने में करना चाहिए। नर सेवा ही नारायण सेवा है। हम महापुरुषों को इसीलिए याद करते हैं कि वे परमार्थ के मार्ग से कभी पीछे नहीं हटे।

डॉ. माताश्री मंगला जी ने नेत्रकुंभ वहां की व्यवस्था और चिकित्सकों की सेवा भावना देख कर हमें बड़ी संतुष्टि मिली थी। मुझे इससे और अधिक आनन्द मिला था, जब कुंभमेला समापन के पश्चात नेत्र कुंभ का समय बढ़ाकर वहां सुरक्षा में लगे सुरक्षाकर्मियों, सफाईकर्मियों, विद्युतकर्मियों आदि कर्मचारियों के लिए अलग-अलग दिन निश्चित कर उनकी आंखों की जांच की गई और जरूरतमंदों को चश्में प्रदान किये गये। मैं इस सेवा समर्पण के लिए आप सभी को धन्यवाद ज्ञापित करती हूं।

इस बार प्रयागराज महाकुंभ-2025 में 5 लाख नेत्र परीक्षण और लगभग 3 लाख चश्में वितरण करने का लक्ष्य रखा गया है, जो हमारे लिए परमसंतोष का विषय है। हम द हंस फाउण्डेशन की ओर से आपको भरोसा हजार साधु-संतों, साधकों, विद्वानों, कल्पवासियों एवं तीर्थयात्रियों की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। हमें ऐसी पुण्यात्माओं एवं जरूरतमंदों की सेवा करके बहुत अछा लगता है। जब मनुष्य ही मनुष्य के काम नहीं आयेगा तो कौन उसकी मदद करेगा। मनुष्यता की यही पहचान है कि मनुष्य होने के नाते हम किसी के काम आ जाएं। मैं सभी नेत्रकुंभ आयोजकों को हृदय से शुभकामनाएं देते हुए अपने इष्टदेव से प्रार्थना करती हूं कि प्रयागराज का नेत्रकुंभ सेवाभाव के नये कीर्तिमान स्थापित करे। मुझे भरोसा है कि आप सब अपने पवित्र सेवाभाव से अवश्य कुंभमेला में यश को प्राप्त करेंगे। इस उद्घाटन समारोह को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सहसरसंघ चालक डॉ. कृष्ण गोपाल जी ने भी संबोधित किया।

उत्तराखण्ड राज्य के स्थापना दिवस पर

डॉ. माताश्री मंगला जी 'उत्तराखण्ड गौरव सम्मान पुरस्कार' से सम्मानित

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर पुलिस लाइन, देहरादून में रैतिक परेड का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर उत्तराखण्ड के महामहिम राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल श्री गुरमीत सिंह (से.नि.) एवं मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने द हंस फाउंडेशन की प्रेरणास्रोत डॉ. माताश्री मंगला जी को समाज उत्थान में अद्वितीय योगदान के लिए वर्ष-2024 के "उत्तराखण्ड गौरव सम्मान पुरस्कार" से सम्मानित किया। यह हम सभी भक्तों के लिए गौरव का क्षण है। श्री माता जी को बहुत-बहुत बधाई!

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर देहरादून में आयोजित 'रैतिक परेड' का विहंगम दृश्य

अंतरराष्ट्रीय नि:शक्तता दिवस पर
श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी ने किया ज्योति स्पेशल स्कूल के नए भवन का लोकार्पण

अंतरराष्ट्रीय नि:शक्तता दिवस पर भरत मंदिर स्कूल समिति, ऋषिकेश द्वारा निर्मित ज्योति स्पेशल स्कूल के नए भवन का परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी लोकार्पण करते हुए साथ में स्कूल के पदाधिकारीगण

ऋषिकेश में परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी ज्योति स्पेशल स्कूल के नए भवन का लोकार्पण करने के बाद स्कूल के दिव्यांग बालकों द्वारा निर्मित वस्त्रों के स्टाल का निरीक्षण करते हुए तथा बाईं ओर दिव्यांग बालक

परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी की जयंती 'मातृ शक्ति दिवस' के सुअवसर पर

विशाल जनकल्याण समारोह

आप सभी प्रेमी भक्तों को अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी जी की जयन्ती **"मातृ शक्ति दिवस"** के सुअवसर पर **' विशाल जनकल्याण समारोह'** 5 व 6 अप्रैल, 2025 (शनिवार एवं रविवार) को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। इस समारोह के मुख्य अतिथि एवं वक्ता **परमपूज्य श्री भोले जी महाराज** एवं **डॉ. माताश्री मंगला जी** होंगे। इसके अलवा अनेक विद्वानों, बुद्धिजीवियों, समाज सुधारकों तथा महात्मागण के उद्बोधन के साथ प्रसिद्ध संगीतकारों एवं गायकों द्वारा भजन-संगीत तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की जाएगी। इस सुअवसर पर जिज्ञासुओं को आत्मज्ञान का व्यावहारिक बोध भी कराया जाएगा।

अत: आप अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक प्रेमी भक्तों, जिज्ञासुओं एवं श्रद्धालुओं के साथ सपरिवार पधारकर **'जनकल्याण समारोह'** में भाग लेकर आत्म लाभ अवश्य प्राप्त करें।

कार्यक्रम निम्नानुसार है-

5 अप्रैल को सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक प्रवचन एवं भजन-संगीत

6 अप्रैल को सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक प्रवचन एवं भजन-संगीत

स्थान- श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड,
भाटी, छतरपुर, नई दिल्ली-110074

निवेदक- **हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर),** नई दिल्ली
संपर्क-8800291788, 8800291288

इस जनकल्याण समारोह का सीधा प्रसारण हंसलोक T.V. पर दोनों दिन सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक किया जायेगा।

www.youtube.com/@hanslokTV
https://www.facebook.com/Hanslok

-: पत्रिका संबंधी सूचना :-

सभी आदरणीय महात्मा/बाईगण, प्रचारकों, श्री हंसलोक सेवकों, कार्यकर्ताओं एवं प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन है कि अध्यात्म-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आप सब अपने गाँव/क्षेत्र में **"हंसलोक संदेश"** मासिक पत्रिका को अधिक से अधिक प्रेमी-भक्तों एवं अध्यात्मज्ञान पिपासुओं तक पहुँचायें। पत्रिका अध्यात्म ज्ञान प्रचार का स्थाई माध्यम है। पत्रिका के माध्यम से आपको हर माह परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के देशभर में स्थान-स्थान पर आयोजित जनकल्याण समारोहों में दिए गए प्रवचनों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही जनकल्याण समारोहों के सुन्दर-सुन्दर चित्र और विस्तृत विवरण पढ़ने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा माता जी/महाराज जी के कार्यक्रमों की सूचना, संस्थागत आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, जनकल्याण से सबंधित गतिविधियों के साथ-साथ विभिन्न सेवा उपक्रमों की भी सूचना व समाचार मिलेंगे। इसलिए प्रत्येक प्रेमी परिवार में नियमित रूप से पत्रिका अवश्य मंगाई जाए।

प्रेमी भक्तों/पाठकों को ज्ञात हो कि संस्था के सभी प्रचारक महात्मा/बाईगण तथा सेवकों के पास भी पत्रिकायें रहती हैं। आप उनसे हंसलोक संदेश पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। डाक से पत्रिका की सुलभ प्राप्ति के लिए गाँव/क्षेत्र के सभी प्रेमी भक्त एक साथ किसी एक प्रेमी-भक्त के नाम व पते पर पत्रिकाएं बंडल रूप में मंगवा सकते हैं।

नोट:- (1) हंसलोक संदेश पत्रिका की रसीद काटते समय पाठक का पेन नम्बर, आधार नम्बर तथा मोबाइल नम्बर रसीद पर अवश्य लिखें।
(2) पत्रिका की एक रसीद (पर्ची) 100/- रुपये से अधिक की न काटी जाए।
(3) पत्रिका के लिए मनीआर्डर भेजते समय अपना पेन नम्बर, आधार नम्बर और मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।
(4) यदि आप एक से अधिक पत्रिकाएं बंडल के रूप में मंगाना चाहते हैं तो मो.नं-9038675826 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

मूल्य- एक प्रति- रु.10/-

हंसलोक संदेश पत्रिका मंगाने का पता:-

कार्यालय - हंसलोक संदेश
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड, भाटी, छतरपुर,
नई दिल्ली-110074 संपर्क सूत्र- 8860671326

विशेष:- पत्रिका संबंधी अपने अमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराते रहें। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शन का कार्य करेंगे। **-सम्पादक**

फरवरी, 2025 के पर्व-त्योहार

 2 फरवरी रविवार- बसंत पंचमी 12 फरवरी बुधवार- माघ पूर्णिमा गुरु रविदास जयंती
 19 फरवरी बुधवार- शिवाजी जयंती 26 फरवरी बुधवार- महाशिवरात्रि

नेत्र कुम्भ-2025, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

महाकुंभ -2025, प्रयागराज के शुभ अवसर पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी की प्रेरणा से द हंस फाउंडेशन ने अन्य संगठनों के साथ मिलकर महाकुंभ में पधारे साधु-संतों एवं श्रद्धालुजनों के लिए **विशाल नेत्र कुम्भ** लगाया; जिसमें आँखों से संबंधित विभिन्न बीमारियों की जांच, जरूरतमंदों को चश्मा वितरण सहित मोतियाबिंद के ऑपरेशन किए गए। । देश-विदेश से पधारे हजारों श्रद्धालुओं ने इस नेत्र कुम्भ से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। इसके अलावा महाकुंभ मेला के अवसर पर मेडिकल मोबाइल यूनिट के माध्यम से नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच एवं दवाइयाँ प्रदान की गयीं । स्वास्थ्य सेवा का यह कार्य सम्पूर्ण मेला क्षेत्र में अहर्निश चलाया गया।

महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं!

फाल्गुन माह की चतुर्दशी को माता पार्वती और भगवान शिव का विवाह हुआ था, इस दिन शिवजी ने वैराग्य जीवन छोड़ गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया था। सनातन धर्म में शिव का सर्वोच्च परम रूप शिवलिङ्ग माना जाता है जिसे सदाशिव भी कहा जाता है, जो भगवान शिव और देवी शक्ति दोनों की एकता का प्रतिनिधत्व करता है। शिव-शक्ति के संयुक्त रूप ज्योतिर्लिंग स्वरूप का बोध श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु कराते हैं, जिसका ध्यान करके हम शिव की कृपा प्राप्त कर सकते हैं। यही महाशिवरात्रि मनाने का मुख्य उद्देश्य है। सभी को महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं, भगवान शिव सदैव कृपालु बने रहें! **- श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी**

आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।